✱ श्री गणेशाय नमः ✱

अथ विवाह पत्रिका

ओउम् यं ब्रह्म वेदान्त विदोवदन्ति, परम प्रधानं पुरुषंतथाऽन्ये। विश्वोद्गते कारणमीश्वरं वा, तस्मै नमो विघ्नविनाशनाय ॥१॥

जननी जन्म सौख्यानां वर्द्धनी कुलसम्पदां। पदवी पूर्वपुण्यानां लिख्यते विवाह पत्रिका ॥२॥

ऊँ सिद्ध श्री सर्वोपरि विराजमान सकल गुण निधान गंगाजल निर्मल यमुनाजल शीतल पावनपवित्र शुभचरित्र षट्कर्म सावधान शुभऽस्थान............धर्ममूर्ति धर्मावतार श्रीमान्...... तथा श्रीमान्..........तथा श्रीमान्.............तथा श्रीमान्......... तथा समस्त लघु-दीर्घजनों को इतः योग् लिखितम्........... से श्री...............तथा...............तथा..............तथा............. तथा...............तथा................समस्त लघु-दीर्घजनों को यथा योग्य राम-राम वंचना। अत्र कुशलम् तत्रास्तु। अग्रे वृत्तान्तं वाच्यम्। सम्वत् २०५..........मासानां मासोत्तमेमासे. ....मासे शुभे...........पक्षे शुभ तिथौ................वासरे.. ....तदनुसार तारीख.......महीना............सन् १९९.......... का विवाह श्रेष्ठ बनता है। सो आप प्रमाण करना।

वर नाम चिरंजीव............तस्य राशिः............सूर्यबल..... चन्द्रबल.........कन्या नाम सौभाग्यकांक्षिणी कुमारी........... तस्य राशिः..........गुरुबल..........चन्द्रबल.........रविबल....... चन्द्रबल..........गुरुबल......त्रिबल............(लग्न) साहा शुद्धौ लत्तादि दश दोष रहितम् पाणिग्रहण शुभम्।

तिथि.................. ह० पत्रिका लेखक.............

✦ विषय सूची ✦

विषय — पृष्ठ

१. विवाह कर्म की व्याख्या ५
२. वेदी की रचना ६
३. यजमान (कन्या का पिता) का वेदी पर बैठना ६
४. स्वस्तिवाचन ८
५. कन्या के पिता का प्रतिज्ञा-संकल्प १०
६. गणेशादि-पूजन ११
७. नवग्रह आदि का पूजन ३५
८. ब्राह्मणों के तिलक करना तथा पौंहची बांधना १६
९. वर का प्रतिज्ञा-संकल्प तथा पूजन १८
१०. वर भी गणेश आदि का पूजन करे १९
११. कन्या के पिता तथ वर को पवित्री धारण कराना २०
१२. वर को आचमन कराना २२
१३. वर के पौंहची बांधना तथा तिलक करना २२
१४. वर छः आचार्यों का पूजन करे २३
१५. आचार्यों के नाम २४
१६. आचार्य के लक्षण २४
१७. मुकुट पूजन २६
१८. वर को आसन तथा अर्घ देना २७
१९. वर को आचमन तथा मधुपर्क ३०
२०. अंगन्यास ३३
२१. गोदान प्रतिष्ठा संकल्प (कन्यापक्ष) ३४
२२. वेदी संस्कार ३५
२३. अग्नि स्थापन ३६
२४. कन्या को बुलाना ३७
२५. मौड़ी पूजन ३७
२६. कन्या का प्रतिज्ञा संकल्प तथा पूजन ३८
२७. कन्या के पिता का वस्त्र संकल्प ३८

विषय — पृष्ठ

२८. वर कन्या का परस्पर मुख देखना ४०
२९. ग्रन्थिबन्धन ४१
३०. हस्त लेपन ४१
३१. शाखोच्चार ४१
३२. कन्यादान ४४
३३. वर का गोदान संकल्प ४९
३४. कुशकण्डिका करणम् ५१
३५. आहुति देना ५५
३६. अन्तरपट ६३
३७. लाजाहुति ६४
३८. वर को कन्या का अंगूठा पकड़वाये ६५
३९. पाषाण पूजन ६५
४०. गाथा गान ६५
४१. पहली अग्नि परिक्रमा ६६
४२. सप्तपदी ६७
४३. वर के सात वचन ६८
४४. कन्या के सात वचन ६९
४५. वर के चार वाक्य ७०
४६. दूसरी सप्तपदी ७१
४७. कलश के जल का वर कन्या के ऊपर छींटा देना ७१
४८. वर और कन्या का सूर्य के दर्शन करें ७२
४९. ध्रुव दर्शन तथा हृदय स्पर्श ७२
५०. कन्या की माँग में सिन्दूर भरना ७३
५१. स्त्रुवे के घी को मुंह लगाना ७३
५२. पूर्णपात्र दान ७३
५३. पूर्णाहुति विधान ७४
५४. छायापात्र का दान ७६
५५. दान प्रतिष्ठा संकल्प ७६
५६. कर्मकर्त्ता संकल्प ७७
५७. तिलक करना व आर्शीवाद ७७
५८. देवताओं का विसर्जन ७८
५९. शाखोच्चार ७९

✦ अथ विवाह सामग्री ✦

रेणुका या पीली	दूर्वा, कुशा	पूर्णपात्र का लोटा
मिट्टी2॥किलो	आम की टहनी	चावलों से भरा हुआ १
छाज बिना तात का १	पटड़े आम के दो	प्रोक्षणी पात्र की
घड़ा १	घी कटोरे में २५० ग्राम	कटोरी १
करवा १	लोटा १	कांसे की कटोरी
नारियल १	दही १०० ग्राम	छायादान को २
सराईं १०	शहद ५० ग्राम	स्त्रुवा १ शंख १
दीपक १	दौने ढाक के १२	जांड शमी के पत्ते ५०
आटा १ किलो	केले या बांस ४ सरे ४	ग्राम
बताशे १०० ग्राम	गोटा सफेद २ गुच्छी	गाय का गोबर
चावल ५० ग्राम	कंदसुर्ख १ मी०	पान १०
रोली १ रुपये की	चंदोये को	कन्या वर को चार वस्त्र
दुपट्टा अन्तरपट का	गंगाजल एक कटोरी	धोती २ दुपट्टे २
केसर, कपूर १ रुपये का	धान की खील २५०	खुले पैसे १० रुपये के
चन्दन की गिट्टी हुरसा	ग्राम	तील १० ग्राम
ऋतुफल ४	लकड़ी ढाक की ढाई	पीली सरसों १० ग्राम
फूल १०० ग्राम	किलो	अंगूठं स्वर्ण की
धूप २ रुपये की,रुई ५० पैसे	पत्थर का टुकड़ा	सिंदूर ५० पैसे का
हार १०, सुपारी २०	आसन ४	मटकैने २
पचरंगा २ रुपये का	धोती अंगोछा	गाय १
कलावा २ गुच्छी	ब्रह्मा कुशा का १	

मनु भगवान ने आठ प्रकार के विवाह लिखे हैं-

ब्राह्मो दैवस्तथैवार्षः प्राजापत्यस्तथासुरः ।
गान्धर्वो राक्षसश्चैब पैशाचचाष्टमोऽधमः ॥

अर्थ-ब्राह्म १. दैव २. आर्ष ३. प्रजापत्य ४. असुर ५. गान्धर्व ६. राक्षस ७. पिशाच ८. विवाह हैं । उपर्युक्त आठ प्रकार के विवाहों में पहले चार विवाह ही शास्त्रकारों ने श्रेष्ठ माने हैं और इन चारों में ब्राह्म विवाह ही सर्वश्रेष्ठ और मान्य है । ब्राह्म रीत्यनुसार ही इस पद्धति को पं० रामस्परूप शर्मा मेरठ निवासी ने सर्व सज्जनों के हितार्थ रचकर तैयार किया है । कम पढ़े लिखे पंडित भी इस पुस्तक के द्वारा बहुत आसानी से विवाह कर्म सम्पन्न करा सकेंगे ।

—प्रकाशक

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

विवाह पद्धति

भाषा टीका सहित

प्रणम्य परमात्मानं गणेशं च गजाननम् ।
वर्णानां च हितार्थाय पद्धतिः क्रियते मया ॥

व्याख्याः- परमपिता परमेश्वर और गणपति गणेशजी को नमस्कार करके चारों वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) की भलाई के लिए विवाह पद्धति का हिन्दी रूपान्तर किया जाता है ।

विवाह कर्म की व्याख्या

पादत्राणविमोचनं च वरणं वाचार्चनं विष्टरं पाद्यं
विष्टरमर्घ्यमाचमनविधिर्मधुपर्कन्यासौ तथा ।
गौमौड्यग्नि सुहस्तलेपनविधिश्शाखाकुशैः कण्डिका ।
कन्यादानसुवस्त्र ग्रन्थिहवनंह्यन्तरपटपरिक्रमः ॥१
पुनः सप्तपदी कृत्वा वामं दक्षिणकं तथा ।
दक्षिणादानसंकल्पं अक्षतांश्चैव दापयेत् ॥२॥

व्याख्याः- 1. जूते चुराना, 2. पौंहची बाँधना, 3. कन्या के पिता के वचन, 4. मुकुट का पूजन करना, 5. आसन, 6. पैर धोना, 7. दूसरा आसन, 8. अर्घ, 9. आचमन, 10. मधुपर्क, 11. अंगन्यास, 12. गौ संकल्प, 13. मौड़ी, 14. अग्नि, 15. हाथ पीले करना, 16. शंख बजाना, 17. कुशकंडिका, 18. कन्यादान, 19. चार वस्त्र, 20. गठ जोड़ा, 21. हवन, 22. अंतरपट,

23. चार परिक्रमा (फेरे), 24. सात वचन, 25. बायें से दायें और दायें से बाएं होना, 26. विवाह कराई की दक्षिणा सहित संकल्प, 27. देवताओं के मंत्रों का उच्चारण करते हुए उन पर चावल छोड़ना । ये 27 कर्म विवाह में अवश्य किये जाते हैं ।

पंडित पूर्व दिशा की ओर पश्चिम दिशा को मुँह करके वर के सम्मुख बैठे ।

वेदी बनाना

सर्व प्रथम पंडित मिट्टी की दो वेदी बनाए । नवग्रह की उत्तर में, दूसरी हवन के लिए दक्षिण में । तदुपरान्त पंडित उन वेदियों पर आटे से चौक पूरे ।

विवाह के समय लड़की का पिता स्नान करे या हाथ-पैर आदि धोवे । फिर धोती, दुपट्टा आदि साफ वस्त्रों को धारण करे।

卐 कन्या का पिता वेदी के पास बैठे 卐

कन्या का पिता मण्डप में उत्तर की ओर मुंह कर के वेदी के नजदीक बैठ जाए ।

फिर कन्या का पिता आदर से वर को बुलावे ।

निम्न मंत्र का पंडित उच्चारण करते हुए वर से जूते उतरवादे ।

ॐ अथ वाराह्या उपानहा उपमुञ्चते ऽग्नौ हवै देवाधृतकुम्भं प्रवेशयांचक्रुस्ततोवाराहः सम्बभूव तस्माद्वाराही मेदुरो घृतादि सम्बभूव संजानते समे वै तद्रसमभिसंजानते तत्पशूनामेव तद्रसमभिसंतिष्ठते तस्माद्वाराह्या उपानहाउपमुंचते ॥१॥ ॐ अथ वाराहविहितमिति तत्र आसीदित्ये

व्याध हवि स इमान इह व्यास प्रदेशमात्रीं ततो मूक इत्यर्थे वाराह्या द्वितीय उपानहा उपमुंचते ॥२॥

निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए कन्या का पिता वर के पैर धोवे ।

यत्फल कपिलादाने कार्तिक्यां ज्येष्ठपुष्करे ।
तत्फलं पाण्डव श्रेष्ठ वराणां पादशौचने ॥

इसके बाद कन्या का पिता निम्नलिखित मंत्र का उच्चारण करता हुआ अपने हाथ धो ले ।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वा० ॥

वर पूर्व दिशा की ओर मुँह करके आसन पर बैठे ।

पंडित दूर्वा से नीचे लिखे मन्त्र का उच्चारण करते हुए वर के ऊपर गंगा जल के छींटे देवे ।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः
पुनातु माम् ॥

निम्न दिये गये श्लोक का उच्चारण करते हुए पंडित आसन पर चावल छोड़े ।

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ॥

*** वर उस आसन पर पलौथी मारकर पूर्व दिशा को मुख करके बैठ जाए ।**

**वर के दक्षिण की तरफ कन्या और कन्या के दक्षिण की तरफ उसका पिता और कन्या के पिता की दक्षिण की तरफ पंडित बैठे ।*

फिर पंडित सब व्यक्तियों के हाथ में चावल देवे और

वर के हाथ में चावल व दक्षिणा देवे ।

卐 स्वस्तिवाचन 卐

इसके पश्चात पंडित निम्न स्वस्तिवाचन मंत्र का उच्चारण करे और मंत्र के समाप्त होने पर सब सज्जनों से गणेश जी पर चावल छोड़ने को कहे ।

ॐ मतिकरणं भयहरणं गिरजाशरणं गणेशमभिवन्दे, केदारेशनिवेशं योगीशं सर्व जगदीशम् ।

ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः । लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशोविनायकः ॥ धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः । द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥ विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा । संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥ वक्रतुण्डो महाकाय कोटि सूर्यसमप्रभं । अविघ्नं कुरु मे देव ! सर्वकार्येषु सर्वदा ॥ ॐ गणानान्त्वा गणपति ‌ँ हवामहे प्प्रियाणान्त्वा प्रियपति ‌ँ हवामहे ॥ व्वसोमम आहमजानिगर्ब्भधमात्वमजासिगर्ब्भधम् ॥ १ ॐ स्वस्ति न इन्द्रो व्वृद्धश्रवाः स्वस्ति न पूषाव्विश्ववेदाः । स्वस्तिनस्तार्क्ष्यो अरिष्ट-नेमीः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥ २ ॥ ॐ पयः पृथिव्याम्पय औषधीषुपयो

दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥३॥ ॐ व्विष्णोरराटमसि व्विष्णोः श्नप्त्रेस्थो व्विष्णोः स्यूरसि व्विष्णोध्रुवोऽसि । वैष्णवमसिविष्णवेत्वा ॥ ४ ॥ ॐ अग्निर्देवता व्वातो देवता सूर्य्यो देवता चन्द्रमा देवता व्वसवो देवता रुद्रा देवता आदित्या देवता मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता व्वरुणो देवता ॥५॥ ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष‌ँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरौषधयः शान्तिर्व्वनस्पतयः शान्तिर्व्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्ति सर्व्व‌ँ शान्ति शान्तिरेव शान्तिः सामाशान्तिरेधि ॥६॥ ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव । यद्भद्रं तन्न आसुव ॥७॥ ॐ एतन्ते देव सवितर्य्यज्ञम्प्राहुब्बृर्हस्पतये ब्रह्मणे । तेन यज्ञमवतेन यज्ञपतिन्तेनमामव ॥८॥ ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमंतनोत्वरिष्टं यज्ञ ‌ँ समिमन्दधातु । विश्वेदेवा स इहमादयन्तामोम् प्रतिष्ठ । एष वै प्रतिष्ठानाम् यज्ञो यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते सर्व्वमेव प्रतिष्ठितं भवति ओ३म् ॥९॥

卐 कन्या के पिता का प्रतिज्ञा-संकल्प 卐

नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए पंडित कन्या के पिता के हाथ में जल, चावल, पैसे रखकर संकल्प करावे ।

ॐ तत्सद् विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्योन्नमःपरमात्मने श्रीपुराणपुरुषोत्तमाय ॐ अद्य तस्य श्री ब्रह्मणोऽह्निद्वितीय प्रहरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणेजम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरत खण्डे आर्य्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मावर्तैकदेशे पुण्यक्षेत्रे वेदोक्तफलप्राप्तिकामना सिद्ध्यर्थे वर्त्तमानसम्वत्सरे अमुकायने भास्करेऽमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुककरण नक्षत्रयोगयुक्तायाम् अमुकगोत्रोऽहम् ऽमुकशर्माऽहं *श्रुतिस्मृतिपुराणोक्त – फलप्राप्त्यर्थं महापापशमनपूर्वक श्रीयज्ञपुरुष नारायणप्रीत्यर्थं प्राजापत्य विवाहविधिना कन्यादानकर्मण्यादौ निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं गणपत्यादीनां देवनामावाहनं पूजनं च करिष्ये ।

पाधा आगे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए कन्या के पिता से गणेश जी इत्यादी देवताओं का आवाहन एवं पूजन करावे ।

*ब्राह्मण के लिए शर्माहं, क्षत्रिय के लिए वर्माहं, वैश्य के लिए गुप्ताहं और शूद्र के लिए दासोऽहं उच्चारण करें ।

गणेशादि का आह्वान एवं पूजन

आवाहनम्, आसनम्, पाद्यम्, अर्घ्यम्, आचमनीयम्, स्नानम्, वस्त्रम्, यज्ञोपवीतम्, गंधम्, अक्षतम्, पुष्पम्, धूपम्, दीपं, नैवेद्यम्, पुनराचमनीयम्, ताम्बूलम्, पूंगीफलम्, दक्षिणाश्च समर्पयामि नमो नमः ॥

इसके पश्चात नीचे दिये गये मन्त्र का उच्चारण करते हुए कन्या के पिता से हाथ जुड़वा प्रार्थना करावे ।

ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्चवो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्चवो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्चवो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमो नमः ॥१॥

गजाननं भूतगणादि सेवितं, कपित्थ जम्बूफल चारु भक्षणम् । उमासुतं शोकविनाशकारकं, नमामि विघ्नेश्वर पादपंकजम् ।

ब्रह्मा जी का आह्वान

नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए कन्या का पिता हाथ में चावल लेकर ब्रह्मा का आवाहन करे–

ॐ ब्रह्माणं शिरसा नित्यमष्टनेत्रम् चतुर्मुखम् ।
गायत्री सहितं देवं ब्रह्माणं आवाहयाम्यहम् ॥२॥

पूजन कर सब सामग्री चढ़ावे हाथ जोड़कर प्रार्थना करे ।

ॐ ब्रह्मयज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरु-
चोव्वेनऽआवः । सुबुध्न्या ऽउपमा ऽअस्यविष्ठा
सतश्च योनिमसतश्च विवः ॥३॥

विष्णु जी का आह्वान

नीचे दिये गये मन्त्र का उच्चारण करते हुए विष्णु भगवान का आह्वान करे ।

ॐ केशवं पुण्डरीकाक्षं माधवं मधुसूदनम् ।
रुक्मिणीसहितं देवं विष्णुमावाहयाम्यहम् ॥५

नीचे दिये गये मन्त्र का उच्चारण करते हुए विष्णु जी का पूजन कर सब सामग्री चढ़ावे तथा हाथ जोड़कर प्रार्थना करे ।

ॐ विष्णोरराटमसि व्विष्णोः श्नप्त्रेस्थो व्विष्णो
स्यूरसि विष्णोध्रुवोसि । वैष्णवमसि व्विष्णवे
त्वा ॥५॥

शिवजी का आह्वान

नीचे दिये गये मन्त्र का उच्चारण करते हुए भगवान शंकर का आह्वान करे ।

ॐ शिवं शंकरमीशानं द्वादशार्द्धत्रिलोचनम्
उमयासहितं देवं शिवमावाहयाम्यहम् ॥६॥

आगे दिये गये मन्त्र का उच्चारण करते हुए भगवान शंकर पर सब सामग्री चढ़ाए तथा हाथ जोड़कर प्रार्थना करे ।

ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय
च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय
च ॥७॥

लक्ष्मी जी का आह्वान

नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए दोनों हाथ फैलाकर लक्ष्मी जी का आह्वान करे ।

क्षीरसागरसम्भूतां शरीरे विष्णुमाश्रिताम् ।
यजमानहितार्थाय लक्ष्मीमावाहयाम्यहम् ॥८॥

नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए लक्ष्मी जी पर सामग्री चढ़ावे तथा हाथ जोड़कर प्रार्थना करे ।

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहो रात्रे पार्श्वेनक्षत्राणि
रूपमश्विनौव्यात्तम् इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाणा
सर्व्वलोकम्मऽइषाणा ॥९

वरुणाय नमः

नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए वरुण देवता पर सब सामग्री चढ़ावे और हाथ जोड़कर प्रार्थना करे ।

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसिव्वरुणस्य स्कम्भ
सर्ज्जनीस्थो व्वरुणस्यऋत सदन्यसिव्वरुणस्यऽऋ-
तसदनमसि व्वरुणस्यऋतसदनमासीद् ॥१०॥

ओंकाराय नमः

नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए ओंकार पर सब सामग्री चढ़ावे और हाथ जोड़कर प्रार्थना करे ।

ओंकार बिन्दुसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः ।
कामदं मोक्षदं चैव ओंकाराय नमो नमः ॥११॥

नवग्रह आदि का पूजन

सूर्याय नमः

नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए सूर्य पर सब सामग्री चढ़ावे तथा हाथ जोड़कर प्रार्थना करे ।

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतम्मर्त्यञ्च ।
हिरण्ययेन सवितारथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन् ।
इति सूर्य्याय नमः ॥१२॥

चंद्राय नमः

नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए चन्द्रमा पर सब सामग्री चढ़ावे तथा हाथ जोड़कर प्रार्थना करे ।

ॐ इमन्देवा ऽअसपत्न ꣳ सुवद्ध्वम्महते क्षत्रायमहते ज्येष्ठाय महते जानराज्यायेन्द्रिस्येन्द्रियाय इममभुष्यपुत्रममुष्यै पुत्रमस्यैव्विशऽएष वोऽमीराजा सोमो ऽस्माकम् ब्राह्मणानाꣳ राजा । इति चन्द्राय नमः ॥१३॥

भौमाय नमः

नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए मंगल पर सब सामग्री चढ़ावे तथा हाथ जोड़कर प्रार्थना करे ।

ॐ अग्निर्मूर्द्धादिवः ककुत्पति पृथिव्याऽयम् । अपाꣳ रेताꣳ सि जिन्वति । इति भौमाय नमः ॥१४॥

बुधाय नमः

नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए बुध पर सब सामग्री चढ़ावे तथा हाथ जोड़कर प्रार्थना करे ।

ॐ उद्बुद्ध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते स ꣳ सृजेथामयञ्च । अस्मिन्त्संधस्थे अध्युत्तरस्मिन्वि-श्वेदेवा यजमानश्च सीदत । इति बुधाय नमः॥१५॥

बृहस्पतये नमः

नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए बृहस्पति पर सब सामग्री चढ़ावे तथा हाथ जोड़कर प्रार्थना करे ।

ॐ बृहस्पते अतियदर्य्योऽअर्हाद्युम द्विभाति क्रतुमज्जनेषु ।
यद्दीदयच्छ वसऽऋतप्रजात तदस्मासुद्र विणन्धेहिचित्रम् ।
इति बृहस्पतये नमः ॥१६॥

शुक्राय नमः

आगे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए शुक्र पर सब सामग्री चढ़ावे तथा हाथ जोड़कर प्रार्थना करे ।

ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसम्ब्रह्मणाव्यपिवत्क्षत्रम्पयः सोमम्प्रजापतिः । ऋतेनसत्यमिन्द्रियंव्विपान ঌ शुक्रमन्धस ऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदम्पयोऽमृतम्मधु । इति शुक्राय नमः ॥१७॥

शनिश्चराय नमः

नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए सब सामग्री शनि पर चढ़ावे तथा हाथ जोड़कर प्रार्थना करे ।

ॐ शन्नो देवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये शंय्योरभिस्त्रवन्तु नः ॥१८॥

राहवे नमः

नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए राहु पर सब सामग्री चढ़ावे तथा हाथ जोड़कर प्रार्थना करे ।

ॐ कयानश्चित्रऽआभुवदूती सदावृधः सखा । कया शचिष्ठयावृता ॥१९॥

केतवे नमः

नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए केतु पर सब सामग्री चढ़ावे तथा हाथ जोड़कर प्रार्थना करे ।

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशोमर्य्या अपेशसे । समुषद्भिरजायथाः ॥२०॥

ॐ ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुशशी भूमिसुतो बुधश्च । गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वेग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु । इति नवग्रह पूजा ।

षोडश मातृभ्यो नमः

नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए षोडश मातृ पर सब सामग्री चढ़ावे तथा हाथ जोड़कर प्रार्थना करे ।

ॐ गौरी १, पद्मा २, शची ३, मेधा ४, सावित्री ५, विजया ६, जया ७, देवसेना ८, स्वधा ९, स्वाहा १०, मातरो ११, लोकमातरः१२, हृष्टिः १३, पुष्टिः १४, तथातुष्टिः १५, तथात्म कुल देवता १६ आदौ विनायकः पूज्यो अन्ते च कुलमातरः ॥

सर्पेभ्यो नमः

नीचे दिये गए मंत्र का उच्चारण करते हुए शेषनाग पर सामग्री चढ़ावे तथा हाथ जोड़कर प्रार्थना करे ।

ॐ नमोस्तुसर्प्पेब्भ्यो ये के च पृथिवीमनु । येऽन्तरिक्षे ये दिवि तेब्भ्यः सर्प्पेब्भ्यो नमः ॥ वसुक्याद्यष्टकुलनागेभ्यो नमः ॥

卐 ब्राह्मणों के तिलक करना व पौंहची बाधना 卐

आगे दिये गए मंत्र को बोलते हुए कन्या का पिता चार ब्राह्मणों के तिलक करे ।

ॐ नमोब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च ।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः ॥

नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए कलाई पर पौंहची बाँधे ।

ॐ व्रतेनदीक्षामाप्नोतिदीक्षयाप्नोतिदक्षिणां दक्षिणा
श्रद्धामाप्नोतिश्रद्धया सत्यमाप्यते ॥

नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए पाधा कन्या के पिता के पौंहची बाँधे ।

ॐ येनबद्धोबलीराजा दानवेन्द्रो महाबलः ।
तेनाहं प्रतिबध्नामि रक्षे मा चल मा चल ॥१

इसके उपरान्त पाधा (पंडित) नीचे दिये गये मन्त्र का उच्चारण करते हुए कन्या के पिता के तिलक करे ।

ॐ आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवा मरुद्गणाः ।
तिलकन्ते प्रयच्छन्तु धर्मकामार्थसिद्धये ॥२॥

वर का प्रतिज्ञा संकल्प

जल, चावल, दक्षिणा हाथ में रखकर नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए वर भी प्रतिज्ञा संकल्प करे ।

ॐ अद्येत्यादि मासानां मासोत्तमे मासे-अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकराशिस्थिते भास्करे अमुकगोत्रऽहममुक शर्म्माहं श्रुतिस्मृतिपुराणोक्त धर्मकामार्थ सिद्धयर्थं मम विवाहसाङ्गताफल-सिद्धयर्थंश्रीयज्ञपुरुषनारायणप्रीत्यर्थं, आदौ

गणेशादीनां सर्वेषां देवानां आवाहनं पूजनञ्चाहं करिष्ये ॥

वर भी गणेशादि का पूजन करे

जिस प्रकार कन्या के पिता ने गणेश आदि समस्त देवताओं का पूजन किया है उसी प्रकार वर भी सब देवताओं का पूजन करे ।

वरो ब्रह्माचार्यादीनां वरणं कुर्यात्

इसके पश्चात वर चार ब्राह्मणों का तिलक करे, जिस प्रकार कन्या के पिता ने किया है और पंडित निम्न मंत्रों का उच्चारण करे ।

ॐ नमो ब्रह्मण्य देवाय० ॥ (तिलक करने का मन्त्र)

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति० ॥ (पौंहची बांधने का मन्त्र)

आचार्योऽपि वरस्य रक्षासूत्रं तिलकं कुर्यात्

नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए पाधा जी वर के पौंहची बाँधें ।

ॐ येन बद्धो बली राजा० ॥ (पौंहची बांधने का मन्त्र)

नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए पाधा जी वर के तिलक करें ।

ॐ आदित्यावसवोरुद्रा० ॥ (तिलक करने का मन्त्र)

इसके बाद पंडित जी चार पवित्री कलावे की अथवा कुशा की बनावें और दो पवित्री सराई में रखें तथा लड़की के पिता से उनकी प्रतिष्ठा आगे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए करावें ।

ॐ एतन्ते देव सवितर्य्यज्ञम्प्राहुर्ब्बृहस्पतये ब्ब्रह्मणे ।
तेन यज्ञमवतेन यज्ञपतिन्तेन मामव ।

पूजनम् कुर्यात्

नीचे दिये गये मंत्र का पंडित जी उच्चारण करते हुए पूजन करावें ।

ॐ यम्ब्रह्मवेदान्तविदो वदन्ति परं प्रधानं पुरुषं तथाऽन्ये । विश्वोद्गतेः कारणमीश्वरं वा तस्मै नमो विघ्नविनाशनाय ॥

卐 कन्या के पिता तथा वर को पवित्री पहनाना 卐

पंडितजी नीचे दिये गये मन्त्र का उच्चारण करते हुए एक पवित्री सराई में से उठाकर लड़की के पिता के सीधे हाथ की कन की अंगुली के पास की अंगुली में पहनावें ।

ॐ ब्रह्मणो ब्राह्मणी पत्नी लक्ष्मीसहितो जनार्दनः।
उमया सहितः शंभुः प्रथमोपग्रहमावाहयाम्यहम् ॥

नीचे दिये गये मन्त्र का उच्चारण करते हुए पाधा जी दूसरी पवित्री लड़की के पिता के बायें हाथ की कन की अंगुली के पास की अंगुली में पहनावें ।

ॐ कश्यपस्यादितिः पत्नी चन्द्रपत्नी च रोहिणी ।
बुद्धिर्विनायकश्चैवद्वितीयोपग्रहमावाहयाम्यहम् ॥

नीचे दिये गये मन्त्र का उच्चारण करते हुए पाधा जी दो पवित्री सराई में और रखें तथा कन्या के पिता से उनकी प्रतिष्ठा करायें ।

ॐ एतन्ते देव 0 ॥

नीचे दिये गये मन्त्र का उच्चारण करते हुए कन्या के पिता से पूजन करावें ।

ॐ यंब्रह्मवेदान्तविदोवदन्ति 0 ॥

इसके पश्चात नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए पाधाजी कन्या के पिता से सराई में से एक पवित्री उठाकर वर के सीधे हाथ की कन की अंगुली के पास की अंगुली में पहनाने को कहें ।

ॐ ब्रह्मणो ब्रह्माणी पत्नी लक्ष्मी सहितो जनार्दनः ।
उमया सहितः शम्भुः प्रथमोपग्रहस्तुभ्यम् वर ॥

इसके पश्चात नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए दूसरी पवित्री कन्या का पिता वर के बाँये हाथ की कन की अंगुली के पास की अंगुली में पहनावें ।

ॐ कश्यपस्य पत्नी अदितिश्चन्द्रपत्नी च रोहिणी ।
बुद्धिर्विनायकश्चैव द्वितीयोपग्रहस्तुभ्यम् वर ॥

नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए पाधा जी वर को यज्ञोपवीत पहरावें ।

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् । आयुष्यमग्रयम् प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥

नीचे दिये गये मन्त्र का उच्चारण करते हुए कन्या का पिता वर के आचमन के लिए दौने में जल भरकर उसकी प्रतिष्ठा करे ।

ॐ एतन्ते देव 0 ॥

आगे दिये गये मन्त्र का उच्चारण करते हुए उस जल

से भरे दौने की पूजा करे ।

ॐ यमब्रह्म 0 ॥

卐 वर को आचमन कराना 卐

इसके पश्चात नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए पाधा जी कन्या के पिता से दौना उठाकर वर को देने को कहें। वर उस दौने के जल से आचमन करे ।

ॐ आकाशवाहिनी गंगा करमध्ये तु पावनी ।
त्रैलोक्ये वन्द्यते देवी आचमनं कुरुते वरः ॥

इसके पश्चात एक सराई में वर के वरण के लिए पान के ऊपर कलावा, रोली, चावल, सुपारी, मीठा, फूल ये सब सामग्री रखकर नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए प्रतिष्ठा करे।

ॐ एतन्ते देव 0 ॥

फिर नीचे दिये गये मंत्र को बोलकर पूजन करे तथा सब सामग्री चढ़ावे ।

ॐ यम्ब्रह्म वेदान्त 0 ॥

इसके बाद कन्या का पिता वर का वरण करें ।

卐 वर के पौंहची बांधना व तिलक करना 卐

फिर नीचे दिये गये मन्त्र का उच्चारण करते हुए पाधा जी कन्या के पिता से वर के पौंहची बन्धवावें ।

ॐ वरं वृणीते बलवर्द्धवैदेवा एतस्य गृहस्य
होमं प्रेशंतते तस्मादेवं वर ॐ समर्घयति क्षिप्रेण
इमं गृहं जुह्वन्ति तस्माद् वरं वृणीते ।

आगे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए पाधा जी कन्या के पिता से वर के तिलक करवावें ।

ॐ नमो ब्रह्मण्य देवाय गौ ब्राह्मण 0 ॥

फिर पाधा जी कन्या के पिता से नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए एक दौने में चावल, रोली रखकर उसकी प्रतिष्ठा करावें ।

ॐ एतन्ते देव 0 ॥

फिर नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए पाधा जी उस दौने का कन्या के पिता से पूजन करवावें ।

ॐ यम्ब्रह्म वेदान्तविदो वदन्ति 0 ॥

इसके पश्चात पाधा जी कन्या के पिता से उस दौने को वर को दिलवावें और वर उस दौने को अपने सीधे हाथ पर रख लेवे और कन्या का पिता भी उस दौने पर अपना सीधा हाथ रख लेवे तथा नीचे दिये गए श्लोक का उच्चारण करे ।

यन्मया भाषितं पूर्वं कन्या मनसि कर्मणा ।
इदमर्घं मांगल्यमच्छिद्रकरणाय च ॥
वाचावचनं त्वया कुर्यादहमेव प्रतिग्रही ।
देवद्विज प्रसादेन वाचासुवचनम्भवेत् ॥

श्लोक की व्याख्या:- मैंने जो निश्चय किया था वह मेरा मनोरथ भगवान विष्णु और देवताओं तथा ब्राह्मणों की अनुकम्पा से आज पूर्ण हुआ है ।

卐 वर छः आचार्यों का पूजन करे 卐

इसके पश्चात वर छः आचार्यों का पूजन करे ।

(षडऽर्घ्यान् दद्यात्)

पाधा जी वर के आगे छः दौने रखें, उनमें थोड़ा जल

डालें तथा चावल आदि सब सामग्री डालें और नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए उसे प्रतिष्ठित करावें ।

ॐ एतन्ते देव 0 ॥

फिर नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए उनका पूजन करावें ।

ॐ यम्ब्रह्म वेदान्तविदो वदन्ति 0 ॥

इसके पश्चात पाधा जी नीचे लिखे मंत्र का उच्चारण करते हुए कन्या के पिता से वर के सीधे हाथ पर एक दौना रखवादें ।

卐 आचार्यों के नाम 卐

ॐ षडर्घ्या भवन्त्याचार्य्य ऋषि ऋत्विग्वैवाह्यो राजा प्रियः स्नातक इति । प्रति सम्वतसरान र्हयेयुर्यक्ष्यमाणास्त्वृत्विज इति ।

व्याख्याः- 1. स्नातक, 2. गुरु, 3. राजा, 4. मित्र, 5. वर, 6. ऋत्विक ये छः आचार्यों के नाम हैं ।

आचार्य के लक्षण

वेदाङ्गब्रीह्मचारी च गुणवान् च सुविचक्षणः ।
नीतीज्ञोबुद्धिमान् श्रेष्ठएवमाचार्य्य उच्चते ॥

व्याख्याः- वेद के जानने वाला, जितेन्द्रिय, गुणवान, विद्वान, नीतिवान, सत्यवादी ये छः लक्षण आचार्य के हैं ।

इसके बाद वर उस दौने को इशान दिशा में धर दे । इस तरह कन्या का पिता छः दोने छः बार वर के हाथ में देवे । वर इनको लेकर ईशान दिशा में रख दे ।

इसके पश्चात आगे दिये गये मंत्रों का उच्चारण करते हुए

पाधा जी पृथ्वी पर 12 जगह चावल रखें ।

१- (प्रथमे) गौरीश्वर विवाहे ब्रह्मा आचार्य्यः
२- सावित्री ब्रह्मा विवाहे बृहस्पतिः आ०
३- लक्ष्मी विष्णु विवाहे गणपतिः आ०
४- वन्हिका कश्यप विवाहे पाराशरः आ०
५- छायासूर्य्य विवाहे गर्गमुनिः आचा०
६- रेणुकायमदग्नि विवाहे वशिष्ठः आ०
७- मन्दोदरी रावण विवाहे वशिष्ठः आ०
८- रोहिणी चन्द्र विवाहे द्रोणाचार्य्यः आ०
९- सीता रामचन्द्र विवाहे गौतमः आ०
१०-द्रोपद्यर्जुन विवाहे व्यासः आचार्य
११-भानुमतीभोजराजविवाहे वररुचि० आ०
१२-कलियुगे सर्वे ब्राह्मणाः आचार्य्याः ।

फिर नीचे दिये गये मंत्र से पाधा जी वर तथा कन्या के पिता से उसकी प्रतिष्ठा करावें ।

ॐ एतन्ते देव० ॥

फिर नीचे दिये गये मंत्र से पूजन करावें ।

ॐ यम्ब्रह्म० ॥

इसके बाद नीचे दिये गये मन्त्र का उच्चारण करते हुए वर एवं कन्या का पिता हाथ जोड़कर प्रार्थना करें ।

ॐ शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये ॥

नीचे दिये गये मन्त्र का उच्चारण करते हुए कन्या का पिता वर के सीधे घुटने पर अपना सीधा हाथ करे और ऐसा कहे कि आप अच्छे चाल-चलन वाले हैं । मैं तुम्हारा पूजन करता हूँ । इसके पश्चात वर कहे कि पूजन करो ।

ॐ साधुर्भवानास्तामर्चयिष्यामो भवन्तमिति ब्रूयात् ।

卐 मुकुट पूजन 卐

कन्या का पिता नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए अपनी पांचों अंगुली रोली से भरकर वर के मुकुट पर लगा देवे ।

ॐ रोचन्ते रोचनादिभिस्तरणीविश्वदर्शितो ।
ज्योतिष्टकृदसि सूर्य विश्वमाभासि रोचनम् ॥

इसके बाद कन्या का पिता अथवा पाधाजी दूर्वा पर कलावा लपेटकर दो विष्टर आसन बनाकर रखदें ।

फिर पाधा जी नीचे लिखे मन्त्र का उच्चारण करते हुए एक विष्टर को दौने में रखकर कन्या के पिता से उसकी प्रतिष्ठा करावें ।

ॐ एतन्ते देव० ॥

फिर नीचे दिये गये मंत्र से पूजन करावें ।

ॐ यम्ब्रह्म०॥

इसके पश्चात कन्या का पिता विष्टर का दौना सीधे हाथ में लेवे तथा पाधाजी नीचे दिये गये मन्त्र का उच्चारण करें ।

ॐ विष्टरो विष्टरो विष्टरः इत्यन्येनोक्ते ।
ॐ विष्टरः प्रतिगृह्यतामिति दाता वदेत् ।
ॐ विष्टरं प्रतिगृह्णामीत्यभिधाय ।

卐 वर को आसन तथा अर्घ देना 卐

फिर कन्या का पिता दौने में से वह विष्टर उठाकर वर के हाथ में देवे । वर उस विष्टर को ग्रहण कर ले और नीचे लिखे मन्त्र का उच्चारण करते हुए विष्टर पर बैठे ।

ॐ वर्ष्मोऽस्मि समानानामुद्यतामिव सूर्यः ।
इमन्तमभितिष्ठामियोमां कश्चाभिदासति ॥

वर उस विष्टर को उत्तर की ओर मुँह कर के अपने सीधे पैर के नीचे रखे ।

इसके बाद पाधा जी एक जल से भरे दौने में नीचे श्लोक में दी गईं वस्तुएँ - जल, केशर, फूल, चावल, सितावर पाँच चीजें डालें ।

जलं च कुंकुमं चैव तण्डुलं पुष्पमेव च ।
सवौषधिसमायुक्तं पञ्चाङ्गं पाद्यमुच्यते ॥

फिर नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए उसकी प्रतिष्ठा करे ।

ॐ एतन्ते देव ० ॥

इसके पश्चात नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए उसका पूजन करे ।

ॐ यम्ब्रह्म वेदान्तविदो वदन्ति ० ॥

फिर पंडित उस दौने को कन्या के पिता के हाथ पर रखकर नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करे ।

ॐ पाद्यं पाद्यं पाद्यमित्यन्येनोक्ते ।
ॐ पाद्यं प्रतिग्रह्यतामिति दाता वदेत् ॥
ॐ पाद्यं प्रतिग्रह्णामीत्यभिधाय वरः ॥

इसके बाद नीचे लिखे मंत्र का उच्चारण करते हुए वर कन्या के पिता से उस दौने को अपने सीधे हाथ में ले ।

ॐ विराजो दोहोसि विराजो दोहमसि मयि
पाद्यायै विराजो दोहः ॥

वर उस दौने के पानी को अपने दायें पैर के अंगूठे पर डाले और कन्या का पिता नीचे दिये गये मन्त्र का उच्चारण करते हुए चरण को धावे ।

यत्फलं कपिला दाने ० ॥

फिर कन्या का पिता निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए हाथ धोवे ।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोपिवा ।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षंसबाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

पंडित पहली की भाँति दूसरा विष्ट करावे जैसा पीछे कराया है ।

एक दौने में नीचे श्लोक में दी गई वस्तुएँ-जल, दही, दूब, कुशा, दूध, चावल, जौं और केशर डाले ।

जलक्षीर कुशाग्राणि दधिदुर्वाक्षतांस्तथा ।
यवांश्चकुंकुमञ्चैवेत्यष्टाङ्गमृह्यर्घ्यमुच्यते ॥

इसके पश्चात निम्न दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए प्रतिष्ठा करावे ।

एतन्ते देव० ॥

फिर नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए पूजन करावे ।

ॐ यम्ब्रह्म० ॥

नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए पंडित उस दौने को उठाकर कन्या के पिता के हाथ में देवे ।

ॐ अधोऽर्घोऽर्घः इत्यनेनोक्ते ।
ॐ अर्घः प्रतिगृह्यतामिति दाता वदेत् ।
ॐ अर्घं प्रतिग्रहणामीत्यभिधाय वरः ॥

नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए वर उस दौने को कन्या के पिता से अपने बायें हाथ में लेवे और सीधे हाथ से उस दौने में से चावल लेकर अपने मौड़ के ऊपर छोड़े ।

ॐ आपः स्थ युष्माभिः सर्वान्कामानवाप्नुवानिति ।

फिर उस दौने को सीधे हाथ में लेकर नीचे दिये गये मंत्र को पढ़े ।

ॐ समुद्रं वः प्रहिणोमि स्वाः योनिमभिगछत ।
अरिष्टास्माकं व्वीरा मापरासेचिमत्पयः ॥

फिर उस दौने का जल ईशान दिशा में डालकर दौने को भी वहीं छोड़ देवे ।

पुनः एक दौने में जल भरे । कन्या का पिता उसकी प्रतिष्ठा नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए करे ।

ॐ एतन्ते देव० ॥

फिर नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए पूजन करे ।

ॐ यम्ब्रह्मवेदान्तविदो वदन्ति० ॥

इसके बाद कन्या का पिता उस दौने को नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए सीधे हाथ में लेवे ।

ॐ आचमनीयमाचमनीयमाचमनीयमित्यन्येनोक्ते ।

ॐ आचमनीयं प्रतिगृह्यतामिति दाता वदेत् ।
ॐ आचमनीयं प्रतिगृह्णामीत्यभिधाय ॥

卐 वर को आचमन तथा मधुपर्क देना 卐

नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए कन्या का पिता दौने को वर के दायें हाथ में देवे ।

ॐ आऽमाऽगन्यशसा स थ्वं सृज वर्च्चसा ।
तम्माकुरु प्रियं प्रजानाम धिपतिं पशूनामरिष्टं तनूनाम् ॥

वर उस दौने को अपने बायें हाथ में रखकर सीधे हाथ में उसका जल लेकर तीन बार नीचे दिये हुए मंत्र का उच्चारण करते हुए आचमन करे ।

ॐ गंगा विष्णुः ॥

इसके बाद वर उस दौने को पृथ्वी पर रख देवे ।

नीचे दिये गये मन्त्र का उच्चारण करते हुए वर अपने हाथ धोवे ।

ॐ अपवित्रो पवित्रो वा सर्वा० ॥

कन्या का पिता कांसी के बर्तन में या लोटे में गाय के दूध की दही, शहद और घृत डाले फिर ढाक के पत्ते से ढककर उसकी नीचे दिये गये मन्त्र से प्रतिष्ठा करे ।

ॐ एतन्ते देव० ॥

फिर नीचे दिये गये मन्त्र का उच्चारण करते हुए पूजन करे ।

ॐ यम्ब्रह्म वे० ॥

पंडित उस दही के बर्तन को कन्या के पिता के सीधे हाथ में आगे दिये गये मन्त्र का उच्चारण करते हुए देवे ।

ॐ मधुपर्को * मधेुपर्कोमधुपर्क इत्यन्येनोक्ते ।
ॐ मधुपर्कः प्रतिगृह्यतामिति दाता वदेत् ।
ॐ मधुपर्कः प्रतिगृह्णामीत्यभिधायैव वरः ॥
ॐ मित्रस्येति प्रजापतिऋषिः पंक्तिश्छन्दो मित्रो देवता मधुपर्क दर्शने विनियोगः ॥

कन्या का पिता थोड़ा सा जल छोड़े ।

कन्या का पिता नीचे दिये गये मन्त्र का उच्चारण करते हुए उस पात्र को खोलकर वर को दिखावे कि दही में कोई अशुद्ध वस्तु तो नहीं पड़ी है ।

ॐ मित्रस्य त्वा चक्षुषा सर्वाणि भूताणि समीक्षन्तां मित्रस्यत्वा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे मित्रस्य त्वा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षामहे ।

नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए कन्या का पिता दही का बर्तन वर के हाथ में देवे ।

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां-
पूष्णोहस्ताभ्यां प्रतिगृह्णामि ॥

वर उस बर्तन को अपने बायें हाथ में रखकर नीचे दिये गये मन्त्र का उच्चारण करे ।

ॐ नमः श्यावास्यायान्नशने ।
यत्तआविद्धं तत्ते निष्कृन्तामीति ॥

*घी एक गुना, शहद दुगुना और दही समभाग इसे मधुपर्क कहते हैं ।

वर कनकी अंगुली के नजदीक वाली अंगुली और अंगूठे से उस दही को चलावे और पृथ्वी पर तीन बार उसका छींटा लगावे।

इसके पश्चात नीचे दिये गये मन्त्र का उच्चारण करते हुए वर उसमें से दही लेकर स्वयं खा लेवे ।

ॐ यम्मधुनो मधव्यं परमꣳ रूपमन्नाद्यम् । तेनाऽहं मधुनो मधव्येन परमेण रूपेणान्नाद्येन परमो मधव्योऽन्नादोऽसानि ॥

उपरोक्त मंत्र का तीन बार उच्चारण करते हुए तीन बार दही खाए या दही सारी खाले अथवा मुँह से लगा ले।

शेष मधुपर्क को वेदी से अलग उत्तर दिशा की ओर रख देवे।

फिर नीचे दिये गये मन्त्र का उच्चारण करते हुए वर और कन्या का पिता दोनों हाथ धो लेवें ।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वा० ॥

फिर वर नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए तीन बार आचमन करे ।

ॐ गङ्गा विष्णुः ॥

नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए दही के पात्र को वहाँ से हटवादे फिर उस स्थान पर जल का छींटा लगावे ।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वा० ॥

अंगन्यास

एक दौने में जल, चावल, पान, कलावा, सुपारी, दक्षिणा रखकर वर के दायें हाथ में देवे । वर उस दौने को नीचे दिये गये मंत्रों का उच्चारण करते हुए अपने सब अंगों से स्पर्श करे इसके पश्चात उस दौने को वेदी से पृथक् उत्तर दिशा में रख देवे ।

ॐ वाङ् मे आस्येऽस्तु । (मुख के) ॐ नसोर्मेप्राणोऽस्तु । (नाक के)

ऊँ अक्षणोर्मे चक्षुरस्तु । (पहले सीधी आंख के फिर बायीं आंख के) ऊँ कर्णयोर्मेश्रोत्रमस्तु । (पहले दायें कान के फिर बायें कान के)

ऊँ बाह्वोर्मे बलमस्तु । (पहले दाईं भुजा के फिर बाईं भुजा के) ऊँ ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु । (पहले दाईं जाँघ के फिर बाईं जाँघ के)

ऊँ अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु । (सब अंगों से स्पर्श करे)

इसके पश्चात कन्या का पिता वर को गौदान करे ।

यजमान नीचे दिये गये मंत्र का वर से तीन बार उच्चारण करवावे ।

ॐ गौर्गौर्गौरिति वरयजमानेनोक्ते ।

नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए कन्या का पिता गौदान या उसकी दक्षिणा का संकल्प करे ।

ॐ अद्येत्यादिमासानां मासोत्तमे मासे ऽमुक मासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे

अमुकगोत्रोऽहं अमुकशर्म्माह आत्मनः पुत्रीविवाहसांगताफलसिद्ध्यर्थंश्रीयज्ञपुरुषनारायण प्रीत्यै मधुपर्क सम्बन्धिनीं इमां गां तन्मूल्योपकल्पितां रजतमयी दक्षिणां यथानाम गोत्राय अमुकशर्म्मणे ब्राह्मणाय वर्मणेक्षत्रियाय गुप्ताय वैश्याय शूद्राय विष्णुरूपाय वराय तुभ्यमहं संप्रददे ।

यह दक्षिणा या गौ वर को देवे वर इस प्रकार कहे (ऊँ स्वस्ति) इसके पश्चात पंडित लड़की को तैयार करने को कहें ।

गौदान प्रतिष्ठा संकल्प (कन्यापक्ष) *

नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए कन्या का पिता गौदान की प्रतिष्ठा का संकल्प कर वर को देवे ।

ऊँ अद्येत्यादि मासानां मासोत्तमे मासे० गोदानप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं ताम्रमर्कदैवतं रजतं चन्द्रदैवतं वा तुभ्यमहमुत्सृजे ।

पंडित वर और यजमान दोनों के हाथ में दूर्वा देवे और आगे दिये गये मंत्र का उच्चारण करे ।

---

* दोनों गौदान ब्राह्मण को लेने चाहिएँ ।

*ऊँ माता रुद्राणां दुहितावसूनाᳫं स्वासादित्यानाममृतस्य नाभिः । प्रणुव्वोचं चिकितुषेजनाय मागाभनागा-मदितिंवधिष्टः ममचाऽमुष्य यजमानस्य च पाप्माहतः ।

वर और कन्या के पिता दोनों उस दूर्वा को खींचे और तोड़ दें फिर उसे जमीन पर रख देवें ।

नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए कन्या का पिता पृथ्वी का आह्वान करे ।

ऊँ विष्णुनालकरूपेणजगतां पतिनोद्धृतां क्षमायुक्तां धरणीं च पृथिवीमावाहयाम्यहम् ।

नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए पूजन करे हाथ जोड़कर प्रार्थना करे ।

ऊँ सयोना पृथिवी नो भवानृक्षरनिवेशनी । यच्छानः शर्म्मसप्रथाः । पृथिव्यैनमः ॥

卐 वेदी संस्कार 卐

इसके पश्चात पंडित वेदी बनावे और वेदी के बनाते समय यह देख ले कि उसमें कोई अशुद्ध वस्तु तृणादि न हो ।

एक हाथ भर की चकोर वेदी पर कुशा से छींटा लगाए ।

उन कुशाओं को ईशान दिशा में रख देवे ।

वेदी को गौ के गोबर से लीप देवे ।

---

* *वर गौ को दान करदे या त्याग दे अथवा वन में छोड़ दे । वह तृण को खाकर हमे पुष्ट करे । गौ रुद्रों की माता, वसुओं की पुत्री तथा देवताओं की बहिन है ।*

सुवे की जड़ से वेदी पर तीन लकीरें खींचे ।

कनकी अंगुली के पास की अंगुली और अंगूठे से वेदी की उन तीन रेखाओं से थोड़ी सी मिट्टी ऊपर को उछाले । फिर कुशा से जल का छींटा लगावे ।

卐 अग्नि स्थापना 卐

* नये कांसे के बर्तन या सकोरे में अग्नि मँगाए और उसे ढक कर रख लेवे ।

इसके पश्चात नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए वर तथा कन्या का पिता अग्नि का आह्वान करें ।

मुखं समस्त देवतानां खाण्डवोद्यानदाहकम् ।
पूजितं सर्वयज्ञेषु अग्निमावाहयाम्यहम् ॥

इसके पश्चात नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए अग्नि की पूजा करे तथा हाथ जोड़कर प्रार्थना करें ।

ॐ अग्निदूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रवे देवान् आसादयादिह ॥१॥ अग्नये नमः ।

कन्या का पिता और वर नीचे दिये गये मन्त्रों का उच्चारण करते हुए सूवे की प्रतिष्ठा करें ।

ॐ एतन्ते देव सवित० ॥

फिर नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए उसका पूजन करें ।

ॐ ब्रह्मयज्ञानम्प्रथम पुरस्ता० ॥

इसके पश्चात पंडित वेदी पर लकड़ी रखकर अग्नि रख देवे ।

** नोट- अग्नि को नाई से न मंगवाये ।*

卐 कन्या को बुलाना 卐

*इसके पश्चात पाधा स्नान कराकर कन्या को बुलावे ।

नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए कन्या का पिता लड़की के जूते उतरवाकर अलग रख दे ।

ॐ अथ वाराह्य उपानहा उपमुच्यते० ॥
ॐ अथ वाराह विहित० ॥

फिर कन्या का पिता नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए अपने हाथ धो ले ।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वा० ॥

लड़की को मण्डप के नीचे लड़के के दाहिने हाथ की ओर बैठाए ।

卐 मौड़ी पूजन 卐

फिर पंडित नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए मौड़ी के चारों तरफ रोली लगाकर उसकी प्रतिष्ठा वर से करावे ।

ॐ एतन्ते देव० ॥

इसके पश्चात नीचे दिये गए मंत्र का उच्चारण करते हुए हाथ जोड़कर पूजन करे ।

ॐ यम्ब्रह्म० ॥

यजमान का पुरोहित नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए लड़की के सिर पर मौड़ी बाँधे ।

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्ण चतु०॥

**लड़की को नहलाकर तथा जेवर आदि पहनाकर लड़की का भाई या मामा मण्डप के नीचे लड़के के दाईं ओर बैठा देवे । लड़का ऐसा बोले कि आइये ।*

फिर नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए कन्या से स्वस्ति वाचन कराए ।

* ॐ गणानांत्वा गणपतिꣳ ॥

卐 कन्या का प्रतिज्ञा संकल्प व पूजन 卐

इसके पश्चात् पंडित नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए कन्या से उसके हाथ में जल, चावल, दक्षिणा आदि दिलवाकर संकल्प करवावे ।

ॐ अद्यतत्सत्विष्णुर्विष्णुर्विष्णु० अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुक गोत्रोऽहं अमुकनाम्नी अहंआत्मनः विवाहोद्देश्येगणेशादीनां आवाहनं पूजनं च करिष्ये ॥

कन्या गणेश आदि से पूजन आरम्भ कर सब देवताओं का पूजन करे ।

卐 कन्या के पिता का वस्त्र संकल्प 卐

* इसके बाद कन्या का पिता वर को अपनी सामर्थ्यानुसार चार वस्त्र देवे । पंडित पहले इन वस्त्रों की प्रतिष्ठा नीचे दिये गये मन्त्र का उच्चारण करते हुए यजमान से करावे ।

ॐ एतन्ते देव० ॐ यम्ब्रह्म०॥

इसके पश्चात् कन्या का पिता जल, चावल, दक्षिणा लेकर नीचे दिये गये मन्त्र का उच्चारण करते हुए चार वस्त्रों का संकल्प करे ।

* ॐ गणानांत्वा गणपति ꣳ - इस मंत्र को पूरा बोले

* वस्त्र-दुपट्टे 2, धोती 2, कन्या और वर को देवे ।

अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकगोत्रोऽहं अमुकशर्माहं आत्मनः पुत्रीविवाहसांगता सिद्ध्यर्थं श्रीयज्ञपुरुषनारायणप्रीत्यै चतुर्वस्त्रं विष्णुदैवतो यथा नामगोत्राय ब्राह्मणाय वराय विष्णुरूपाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥

फिर वह चार वस्त्र वर को दे देवे ।

वर उन वस्त्रों में से एक धोती नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए कन्या को देवे ।

ॐ जराङ्गच्छ परिधत्स्व वासो भवा कृष्टी नामभिशस्ति पावा शतञ्च जीव शरदः सुवर्च्चारयिञ्च पुत्रननु संव्ययस्वायुष्मतीदं परिधत्स्व वासः ॥

वर उस धोती को कन्या के घुटने पर रख देवे ।

नीचे दिये गये मन्त्र का उच्चारण करते हुए वर दूसरा वस्त्र दुपट्टा कन्या को देवे ।

ॐ याअकृन्तन्नवयन्या अतन्वत याश्च देव्यस्तन्तून- भितोततंथ ॥ तास्त्वा देवीर्जरसे संव्ययस्वायुष्मतीदं परिधत्स्व वासः ॥

वर इस दुपट्टे को कन्या के दायें कंधे पर रख देवे ।

वर नीचे दिये गये मन्त्र का उच्चारण करते हुए तीसरा वस्त्र अर्थात् धोती हाथ में लेवे ।

ॐ परिधास्यै यशोधास्यै दीर्घायुष्ट्वाय जरदष्टिरस्मि । शतञ्च जीवामि शरदः पुरू चीरा

यस्पोषमीभिसंव्ययिष्ये ।

वर उस वस्त्र को अपने घुटने पर रख ले । इसके पश्चात् वर चौथे वस्त्र को नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए हाथ में लेवे ।

ॐ यशसामाद्यावापृथिवीयशसेन्द्रा बृहस्पतिः ।
यशोभगश्चमाविदद्यशो माप्रतिपद्यताम् ॥

वर इस दुपट्टे को अपने सीधे कंधे पर रख लेवे ।

इसके पश्चात नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए पंडित वर और कन्या दोनों को तीन बार आचमन करावे ।

ॐ गंगा विष्णुः०३ ॥

इसके पश्चात नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए वर तथा कन्या के हाथ धुलवावे ।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वाव० ॥

卐 वर और कन्या का आपस में मुख देखना 卐

*इसके पश्चात वर और कन्या आपस में एक दूसरे का मुँह देखें और वर नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करे ।

ॐ समञ्जन्तु विश्वे देवाः समापो हृदयानि नौ ।
सम्मातरिश्वा संधाता समुद्रेष्ट्री दधातु नः ॥

---

* कन्या का मुख पूर्व दिशा की ओर वर पश्चिम की तरफ मुख करके कन्या का मुख देखे ।

ग्रंथिबन्धन

कन्या का पिता वर तथा कन्या दोनों के वस्त्रों में गाँठ बाँधे । वर के दुपट्टे के एक कोने में दूर्वा, चावल, दक्षिणा बाँधे और कन्या के दुपट्टे के सीधे कोने में चार हल्दी की गाँठ, पाँच सुपारी, चावल, दूर्वा और दक्षिणा बाँधकर छोड़ देवे ।

卐 हस्त लेपन 卐

इसके बाद कन्या का पिता वर के दायें हाथ में और कन्या के दोनों हाथों में नीचे दिये गये मन्त्र का उच्चारण करते हुए हल्दी लगावे ।

लक्ष्मीप्रिया च लक्ष्मीदा लक्ष्मीश्च जनप्रिया ।
सौभाग्यदा वरस्त्रीणां हरिद्रे श्रीः सदाऽस्तु मे ॥

फिर वर और कन्या दोनों के हाथ में दक्षिणा तथा कलावे का एक-एक सिरा दे देवे ।

卐 शाखोच्चार 卐

इसके पश्चात वर की ओर से पुरोहित शाखा उच्चारण करे-

ॐ श्रीमत्पंकजविष्टरौ हरिहरौ वायुर्महेन्द्रो नलश्चन्द्रो भास्करवित्त पालवरुणाः प्रेताधिपाद्या ग्रहाः प्रद्युम्नो नलकूबरौ सुरगजश्चिन्तामणिः कौस्तुभः स्वामी शक्तिधरश्च लांगलधरः कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥१॥ गौरी श्रीकुलदेवता च सुभगा भूमिः प्रपूर्णा शुभा सावित्री च सरस्वती च सुरभिः सत्याव्रतारुन्धती । स्वाहा जाम्बवन्ती च रुक्म भगिनी दुःस्वप्नविध्वंसिनी वेला

चाम्बुनिधे समीनमकरा कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥२॥ गंगा सिन्धु सरस्वती च यमुना गोदावरी नर्मदा । कावेरी सरयूः महेन्द्रतनया चर्मण्यवती वेदिका । क्षिप्रा वेत्रवती महासुरनदी ख्याता च या गण्डकी, पुण्याः पुण्य-जलैः समुद्र सहितः कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥३॥ लक्ष्मी कौस्तुभपारिजातकसुरा धन्वन्तरिश्चन्द्रमा धेनुः कामदुधा सुरेश्वरगजो रम्भा च देवांगना । अश्वः सप्तमुखो विषहरिध नुः शंखोऽमृतं चाम्बुधेः रत्नानीति चतुर्दश प्रतिदिनं कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥४॥ नेत्राणां त्रितयं शिवं पशुपतेरग्नित्रयं पावनं, यद्विष्णोश्च पदत्रयं त्रिभुवनं ख्यातं च रामत्रयम् । गंगावाहपथत्रयं सुविमलं वेदत्रयं ब्राह्मणाः । संध्यानां त्रितयं द्विजैरभिहितं कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥५॥ बाल्मीकिसनकः सनन्दन-मुनिव्यासो वशिष्ठोभृगुर्जावालिर्जमदग्निरामजनकौ गंगाधरौ गौतमः ॥ मान्धाता ऋतुपर्णवेणसगरा धन्यो दिलीपोनलः । पुण्योधर्मसुतोययाति नहुषः कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥६॥ अश्वत्थो वटवृक्षचन्दनतरुर्मन्दारकल्पद्रुमो जम्बूनिम्बकदम्बनूतनरसावृक्षाश्च ये क्षीरिणः । सर्वे ते फल मिश्रिताः प्रतिदिनं वैराजितं राजते,

रम्यं चैत्ररथं सनन्दनवनं कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥७॥ गंगागोमती-गोपतिर्गणपतिर्गोविन्द-गोवर्ध नौ गीता गोमयगौरिजागिरिसुता गंगाधरो गौतम ! गायत्रीगरुड़ो गदागिरिगजा गम्भीरगोदावरी । गंध र्वग्रहगोपगोकुलगणाः कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥८॥ इत्युक्तं वर मंगलाश्ष्टकमिदं संचित्य नामास्थितम् । गंगासागर संगमः प्रतिदिनं कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥९॥

फिर गोत्र और पीढ़ियों का उच्चारण करे ।

अद्यामुकगोत्रस्य अमुकप्रवरस्य अमुकशर्म्मणः प्रपौत्रोऽयं ॥१॥ अद्याऽमुक गोत्रस्य अमुकप्रवरस्य अमुकशर्मणः पौत्रोऽयं ॥२॥ अद्याऽमुकगोत्रस्य अमुकप्रवरस्य अमुकशर्मणः पुत्रोऽयं ॥३॥

इस तरह तीन बार शाखा उच्चारण करे ।

फिर कन्या की ओर का पुरोहित शाखोच्चार पढ़े जिस तरह वर के पुरोहित ने पढ़ा है और फिर पीढ़ियों का भी उच्चारण करे ।

अद्याऽमुक गोत्रस्यामुक प्रवरस्यामुक शर्म्मणः प्रप्रौत्रीयम् ॥१॥ अद्यामुकगोत्रस्यामुक प्रवरस्यामुकशर्मणः पौत्रीयम् ॥२॥ अद्यामुकगोत्रस्यामुकप्रवरस्यामुकशर्मणः पुत्रीयम् ॥३॥

इस तरह तीन बार शाखोच्चार पढ़े ।

पंडित आगे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए वर और कन्या पर चावल छोड़े ।

ॐ शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजं०।

इसके पश्चात कन्या का पिता कन्या का संकल्प करे, अपनी पत्नी से गठ-जोड़ा बाँधकर अथवा एक पैसा उसके हाथ से छुवाकर मंगाले ।

कन्या का पिता अपने हाथ में चावल, दूर्वा, शंख, चन्दन, फूल, जल, फल और दक्षिणा लेवे और कन्या के दायें हाथ के अंगूठे को अपने दायें हाथ में पकड़े और कन्या के हाथ के बराबर (वर) अपना दायाँ हाथ करले और नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करे ।

* दाताऽहं वरुणोराजाद्रव्यमादित्य दैवतम् ।
वरोऽसौविष्णुरूपेण प्रतिगृहाणत्वयंविधिः ॥

फिर वर के बायें हाथ के नीचे अपनी सामर्थ्य के अनुसार पैसे रख नीचे दिये मंत्र का उच्चारण कर संकल्प करे ।

* कन्यादान संकल्प

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णु ॐ नमः परमात्मने श्रीपुराण पुरुषोत्तमाय श्रीनारायणस्य नाभिकमलोद्भूतसकललोकपितामहेन ऐरावतपुण्डरीक

* लड़की का पिता लड़के से कन्यादान स्वीकार करने की प्रार्थना करे और लड़का अपना दायां हाथ कन्यादान लेने को फैलाये ।

* जो कुटुम्बी या रिश्तेदार कन्यादान में जो कुछ देना चाहें अपने हाथ में ले लें अपना गोत्र और नाम बोलकर संकल्प के बाद वर को दे दें ।

श्रीकूर्मवाराहसप्तद्वीपमण्डितायांपृथिव्यां जम्बूद्वीपे भरतखण्डे निखिलजनपावने आर्य्यावर्तैकदेशे बहुक्षेत्रान्विते भारतवर्षे श्रीगंगा यमुना सरस्वती गोदावरी नर्मदा सरयू बहुतीर्थसम्पन्ने पावनविष्णुलोकरुद्रलोक ध्रुवलोक निवास सिद्धयर्थं श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगेकलियुगे कलिप्रथमचरणे पुण्यामुकक्षेत्रे शुभसम्वत्सरे अस्मिन् अमुकायने गतसूर्य्येऽमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ ऽमुकवासरे अमुक ऋतौ अमुकनामनक्षत्रे यथायोगकरणमुहूर्ते वर्तमानचन्द्रतारानुकूले एवं ग्रहगुणविशिष्टायां अस्यां पुण्यवेलायां अमुकगोत्रो अमुकराशिः ऽमुकशर्म्मा सपत्नीकोऽहं ऽमुकगोत्रस्य यथोक्तप्रवरस्य अमुकवेदिनो अमुकशाखिनो ऽमुकसूत्रिणो अमुकशर्म्मणः प्रपौत्राय ॥१॥ अमुकगोत्रस्य यथोक्तप्रवरस्य अमुकवेदिनो अमुकशाखिनो अमुकसूत्रिणो अमुकशर्म्मणः पौत्राय ॥२॥ अमुकगोत्रस्य यथोक्तप्रवरस्य अमुकवेदिनो अमुकशाखिनो अमुकसूत्रिणो ऽमुकशर्मणः पुत्राय ॥३॥

* वर का पुरोहित कन्यादान संकल्प का तीन बार उच्चारण करे ।

अमुकगोत्रस्य यथोक्तप्रवरस्य अमुकवेदिनो अमुकशाखिनो अमुकसूत्रिणो अमुकशर्म्मणः प्रपौत्रीम् ॥१॥ अमुकगोत्रस्य यथोक्तप्रवरस्य अमुकवेदिनोऽमुकशाखिनो अमुकसूत्रिणो अमुकशर्म्मणः पौत्रीम् ॥२॥ अमुकगोत्रस्य यथोक्तप्रवरस्य अमुकवेदिनो अमुकशाखिनो अमुकसूत्रिणो अमुकशर्म्मणः पुत्रीम् ॥३॥

कन्या का पुरोहित कन्यादान के संकल्प को तीन बार पढ़े ।

इमां कन्यां सालंकारां स्वर्णजटितमणिमौक्तिकविद्रु माहतधौतरक्त पीतकौशेयशोभितां ताम्बूलपूंगी-फलागरु कर्पूर श्रीखंड कस्तूरिका कुंकुम लवंग जातिफल चम्पक मालती कुसुमराज विविधफल तूलिकादिरौप्यकांस्यताम्रमृणमयभाण्डादीनां गोवृषमहिष्युष्ट्राजादिका दासदासीनां ग्रामादीनां अन्नपानलवण सर्वोपस्करसहितां यथाशक्ति-हिरण्यमग्निदैवतं कांस्यपात्रसोमदैवतं ताम्रपात्रमर्क दैवतम् व्यञ्जनकं वायुदैवतं अश्वमा दित्यदैवतं

* पहले पाधा लड़के के बाबा, पड़बाबा और पिता का नाम लेवे, फिर कन्या की तीन पीढ़ियों का नाम लेवे इस तरह तीन बार कहे ।

गोवृषरुद्रदैवतं दासदासी प्रजापति दैवतं वा शैय्यातूलिकानानाविधमिन्द्रदैवतं मूलं नागदैवतं ग्राम प्रजापतिदैवतं महिषी धर्मदैवतं वासो बृहस्पतिदैवतं मणिमौक्तिकं रुद्रदैवतं सर्वोपस्करं विष्णुदैवतं महद्वस्त्रद्वयावृतां विवाहदीक्षितां प्रजापतिदैवतां शतजन्मब्रह्मलोकनिवासार्थं एतानि वस्तूनी यत्किंचत्किंचित्प्रत्यक्षं अमुकनाम्नीं कन्यां लक्ष्मीरूपां अमुकगोत्रायामुकनाम्ने वराय विष्णुरूपाय पत्नीत्वेन तुभ्यमहं संप्रददे ।

फिर कन्या का पिता कन्या का हाथ और सब वस्तुएँ वर के हाथ में देवे । वर फिर ऐसा कहे (ॐ स्वस्ति) इसके पश्चात वर पैसों पर से अपना हाथ उठाले और वह पैसे पड़िये को देवे ।

इसके पश्चात कन्या का पिता सामर्थ्यानुसार दक्षिणा, जल, अक्षत लेकर नीचे दिये गये मन्त्र का उच्चारण करते हुए कन्यादान प्रतिष्ठा का संकल्प करे । इसके साथ ही जो निकट सम्बन्धी स्त्री-पुरुष कन्यादान लेवें वे भी संकल्प करें ।

अद्याऽमुकगोत्रोऽहं ऽमुकशर्म्माहं कृतैतत् कन्यादान प्रतिष्ठा सांगताफल प्राप्त्यर्थं हिरण्यमग्निदैवतं अमुकगोत्राय अमुकनाम्ने वराय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय विष्णुरूपाय इमां दक्षिणां तुभ्यमहं

सम्प्रददे ॥

इसके पश्चात कन्या का पिता एवं निकट संबंधी अपनी दक्षिणा वर को दे देवें ।

फिर वर नीचे दिये गये मन्त्र का उच्चारण करे-

ॐ कोदात्कस्मादात् कामोदात् कामायादात् ।
कामो दाता कामः प्रतिग्रहीता काममैतत्ते ॥

इसके पश्चात कन्या का पिता हाथ जोड़े और पंडित नीचे दिये गये मन्त्रों को पढ़े ।

कन्यां कनकसम्पन्नां वस्त्राभरणैर्युताम् दास्यामि विष्णवे तुभ्यं ब्रह्मलोकजिगीषया ॥१॥ ऋषयः सर्वभूतानां साक्षिणः सर्वदेवताः । इमां कन्यां प्रदास्यामि पितृणां तारणाय च ॥२॥ कन्यादानं महादानं सर्वदानेषु दुर्लभम् । तदद्य दैवयोगेन त्वं गृहाण वरोत्तम ! ॥३॥ गौरीं कन्यामिमां विप्र यथाशक्तिविभूषितां गोत्राय शर्म्मणे तुभ्यं दत्तां विप्र समाश्रय ॥४॥ मम वंशसमुद्भूता यावद्वर्षाणि पालिता तुभ्यं वर मयादत्ता पुत्रपौत्रप्रवर्द्धिनी ॥५॥

वर का गौदान संकल्प

वर नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए कन्या के पुरोहित को गौदान देवे ।

अद्येत्यादिमासानां मासोत्तमेमासे अमुकगोत्रोऽहं अमुकनामाहं भार्य्या प्रतिग्रहदोषनिवारणार्थं इमां गां सवत्सां गोविन्ददैवतं यथावस्तु यथोपस्कर सहितां तरुणीरूपसंयुक्तां सुशीलां च पयस्विनीम् कामाक्षीं वातन्निष्क्रयिणीं दक्षिणां हिरण्यमग्निदैवतं रजतंचन्द्रदैवतं अमुकगोत्राय अमुकशर्म्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे ।

नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए हाथ में जल, चावल, दक्षिणा लेकर गौदान प्रतिष्ठा का संकल्प करे ।

गोदानप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं ताम्रमर्कदैवतं यथानाम गोत्राय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥

ब्राह्मण को दे देवे ।

वैश्य के यहाँ आश्रित को बछिया देवे ।

इसके पश्चात वर ब्राह्मणों को सामर्थ्यानुसार दक्षिणा देवे फिर पंडित नीचे दिये गये मन्त्र का उच्चारण करते हुए वर और कन्या दोनों पर चावल छोड़े ।

ॐ मंत्रार्थाः सफलाः सन्तुपूर्णाः सन्तुमनोरथाः ।
शत्रूणां बुद्धिनाशाय मित्राणामुदयस्तव ॥

आगे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए पंडित वर

और कन्या दोनों के वस्त्रों में गाँठों की प्रतिष्ठा करे ।

ॐ एतन्ते देव० ।

फिर नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए पूजन करे।

ॐ यम्ब्रह्मवेदो० ॥

फिर पाधा वर और कन्या दोनों के वस्त्रों की गाँठ नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए बाँध देवे ।

ॐ गणाधिपं नमस्कृत्य उमां लक्ष्मी सरस्वतीत् ।
दम्पत्योः रक्षणार्थाय पटग्रन्थिम् करोम्यहम् ।
श्रीदेवदेव कुरु मंगलानि सन्तानवृद्धिं कुरु
सन्ततञ्च । धनायुर्वृद्धिं कुरु इष्टदेव,
मद्ग्रन्थिबंधे शुभदा भवन्तु ॥

वर नीचे दिये गये मन्त्र का उच्चारण करते हुए कन्या के दायें हाथ को पकड़े ।

ॐ यदैषि मनसा दूरं दिशोनुपवमानो वा ।
हिरण्यवर्णो वैकर्णः सत्वा मन मनसां करोतु ॥

फिर वर कन्या का जो नाम हो वह ले।

इसके पश्चात वेदी से दक्षिण दिशा में जल से भरे पंचपल्लव सहित एक कलश को लेकर और उसको कंधे के बराबर ऊँचा रखकर एक ब्राह्मण मार्जन के समय तक मौन खड़ा रहे ।

कुशकण्डिका करणम्

वर एक पान पर पुष्प, रोली, चंदन, चावल, कलावा और दक्षिणा रखकर नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए ब्राह्मण के वरण का संकल्प करे ।

अद्येत्यादिमासानां मासोत्तमे मासे० अमुक गोत्रोऽहं अमुकशर्म्माहमद्यकर्तव्यविवाह होमकर्म्मणि कृताकृतावेक्षणरूप ब्रह्मकर्म्म कर्तुममुकगोत्रममुक-शर्म्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्प चन्दन ताम्बूल वासोभिर्ब्रह्मत्वेन होतृत्वेन च त्वामहं वृणे ।

वर उस पान पर से कलावा उठाकर जो ब्राह्मण ब्रह्मा बने उसके नीचे दिये गये मन्त्र का उच्चारण करते हुए पौंहची बाँधे ।

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति० ॥

नीचे दिये गये मन्त्र का उच्चारण करते हुए वर उस पान की रोली से ब्राह्मण के तिलक करे ।

नमोब्रह्म० ॥

इसके पश्चात ब्राह्मण कहे कि हाँ मेरा वरण हो चुका। वर पंडित से कहे कि शास्त्र के अनुसार सब कर्म कराओ ।

पंडित कहे कि जैसा शास्त्र में लिखा है उसी के अनुसार सब कर्म कराऊँगा ।

अग्नि से दक्षिण दिशा में ब्रह्मा के आसन के लिए एक ढाक का पत्ता रखे ।

उस पत्ते के ऊपर कुशा या दूब की नाल रखे तथा पूर्व दिशा की तरफ मुँह करे ।

पंडित कुशाओं का ब्रह्मा बनावे, उस ब्रह्मा को अग्नि के चारों ओर परिक्रमा कराके उस पत्ते की कुशा के ऊपर उत्तर दिशा की ओर मुँह करके उस आसन पर स्थापित कर देवे ।

फिर एक सकोरे में पानी भरकर और उस सकोरे को कुशाओं से ढककर तथा ब्रह्मा की तरफ देखकर अग्नि से उत्तर दिशा की ओर एक कुशा धरकर उसके ऊपर सकोरा रख देवे ।

इसके पश्चात वेदी के चारों तरफ 64 कुशा रखे ।

64 कुशाओं में से 16 कुशा लेकर इस तरह रखे-

चार कुशा अग्नि से ईशान दिशा तक धरे ।

चार कुशा ब्रह्मा से अग्नि तक धरे ।

चार कुशा नैऋत्य से वायव्य दिशा तक धरे ।

चार कुशा अग्नि से प्रणीता पात्र तक धरे ।

इसके पश्चात अग्नि से उत्तर दिशा की तरफ पश्चिम दिशा में तीन कुशा पवित्र छेदन के लिए रखे ।

फिर तीन कुशा के बीच की कुशा को निकालकर दो पत्रों वाली कुशा वेदी से उत्तर में पवित्री बनाने के लिए रख देवे ।

एक सकोरा उत्तर की तरफ प्रोक्षणी पात्र के लिए रख देवे ।

एक घी का बर्तन और तीन कुशायें बेदी के उत्तर में मार्जन हेतु रख देवे ।

उपयमन के लिए तीन कुशाएँ बटकर उत्तर में रख देवे ।

अंगूठे के पास वाली अंगुली जितनी लम्बी तीन लकड़ी उत्तर में रखे और उत्तर में स्रुवा और घी रखे ।

एक बर्तन में वर 256 मुठ्ठी चावल भरकर अथवा सामर्थ्यानुसार एक लोटे में भरकर वेदी के उत्तर में रखे ।

पवित्र छेदन कुशाओं से पूर्व-पूर्व दिशा की ओर सब वस्तु रखता जाए ।

पूर्व दिशा में ही और भी वस्तुएँ-ढाक की लकड़ी व खील (लाजा) रखे ।

दृषदुपल नामक एक पत्थर का बट्टा, बिना तांत का छाज, दृढ़ पुरुष और भी लेपनादि की वस्तुएँ कन्या का भाई रखे ।

पवित्र छेदन कुशाओं से पवित्री छेदन करके एक बालिश्त लम्बाई का पिवत्रा पवित्र करने के लिए बनावे ।

हाथ में पवित्री धारण कर प्रणीता का पानी तीन बार प्रोक्षणी पात्र में डाले ।

पंडित अनामिका और अंगूठे में पवित्रा ले ।

अनामिका और अंगूठे से प्रणीता के जल को तीन बार उछाले ।

प्रणीता के जल को प्रोक्षणी पात्र में तीन बार करे ।

पवित्रे से प्रोक्षणी पात्र के जल का सब वस्तुओं पर

छींटा लगाए ।

अग्नि और प्रणीता के बीच में प्रोक्षणी पात्र को रख देवे ।

एक घी के कटोरे में घी रखे । घी में कोई अशुद्ध वस्तु न पड़ी हो यह देख लेवे ।

घी के पात्र को अग्नि पर रखे ।

एक कुशा को जलाकर वेदी के तथा घृत पात्र के चारों ओर दाहिनी ओर घुमाकर अग्नि में डाल देवे ।

फिर अग्नि को तेज करदे ।

स्रुवे को अग्नि पर लगावे ।

सम्मार्जन की हुई कुशाओं को लेकर उनके अग्रभाग से स्रुवे के आदि, मध्य और अन्त के भाग को छूए ।

प्रणीता के जल से स्रुवे पर छींटा देवे ।

इसके बाद स्रुवे को अग्नि से तपाकर वेदी की दक्षिण दिशा की तरफ रख देवे ।

घी के बर्तन को अग्नि पर से उतार लेवे ।

फिर घी को तीन बार ऊपर को उछाले ।

घृत में यदि कोई अशुद्ध वस्तु पड़ी हो तो उसे निकाल देवे ।

दोबारा फिर घी को तीन बार ऊपर उछाले ।

उपयमन कुशा को उल्टे हाथ में उठा लेवे ।

तदुपरांत पंडित खड़े होकर प्रजापति भगवान का ध्यान करे ।

पंडित मौन रहकर तीन लकड़ी घी में भिगोकर अग्नि

में डाल देवे ।

इसके बाद कर्मकर्त्ता पवित्री को हाथ में धारण किये हुए बैठ जाए । पवित्रे से प्रोक्षणी के जल का अग्नि के चारों ओर छींटा लगावे ।

इसके पश्चात प्रणीता में पवित्रा रख देवे ।

फिर सीधा घोंटा झुकाए ।

अपने दाहिने घुटने से ब्रह्मा तक कुशा मिलाले ।

दायें हाथ में स्रुवे को लेकर प्रचण्ड अग्नि में घी डाले ।

##卐 आहुति देना 卐

इसके पश्चात पंडित स्वाहा करावे और आहुति देने के बाद स्रुवे का कुछ घी प्रोक्षणी पात्र में डालता जावे ।

ॐ प्रजापतये स्वाहा इदम् प्रजापतये ।

यह आहुति हृदय से देवे ।

ॐ इन्द्राय स्वाहा इदमिन्द्राय ।

इन आहुतियों का नाम ही आधार है ।

ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये ।

ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय ।

ये दो आज्य नाम आहुति हैं ।

ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये । ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे । ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय ।

ये तीन आहुतियाँ महाव्याहृति आहुतियां हैं ।

ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडोअवयासिसीष्ठाः । यजिष्ठो वह्नितमः

शोशुचानो विश्वा द्वेषाꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा ॥ इदमग्नीवरुणाभ्याम्० ॥१॥ ऊँ सत्वन्नो अग्नेऽवमो भवोति नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ । अवयक्ष्वनो व्वरुणꣳ रराणो ब्रीहिमृडीकꣳ सुहवो न एधि स्वाहा ॥ इदमग्निवरुणाभ्याम्० ॥२॥ ऊँ अयाश्चाग्नेऽस्यनभि शस्तिपाश्च सत्यमित्वमयासि । अया नो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषजꣳस्वाहा ॥ इदमग्नये अयसे० ॥३॥ ऊँ ये ते शतम्वरुणये सहस्त्रम्यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः । तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा । इदम्वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो मरुद्भ्य, स्वर्केभ्यः इदंन० ॥४॥ ऊँ उदुत्तमम्वरुण पाशमस्मद वाधमं विमध्यमꣳश्रथाय । अथा व्यमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा ॥ इदं वरुणाय० ॥५॥

ये सब प्रायश्चित आहुतियाँ हैं । इसके पश्चात प्रोक्षणी पात्र में घी न डाले ।

घुटने से ब्रह्मा तक मिली हुई कुशा हटाकर नीचे दिये गये मंत्रों से दो आहुतियां देकर जल के हाथ लगावे ।

ऊँ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये । ऊँ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते ।

अथ राष्ट्रभृत्

ऊँ ऋताषाडऋत धामाग्निर्गन्धर्वः । सनऽइदम्ब्रह्मक्षत्रम्पातु तस्मै स्वाहा वाट् ॥ इदमृतासाहे ऋतधाम्ने अग्नये गन्धर्वाय० ॥ ऊँ ऋताषाड्ऋत धामाग्निर्गन्धर्वस्तस्यौषध यो ऽप्सरसोमुदोनाम । ताभ्यः स्वाहा ॥ इदमोषधिभ्योऽप्सराभ्योमुद्भ्यः० ॥

ऊँ सꣳहित विश्वसामा सूर्य्यो गन्धर्व । सनऽइदम्ब्रह्मक्षत्रम्पातु तस्मै स्वाहा वाट् ॥ इदꣳ सꣳ हिताय विश्वसाम्ने सूर्य्याय गन्धर्वाय० ॥ ऊँ स ꣳ हितो विश्वसामा सूर्य्यो गन्धर्वस्तस्य मरीचयोऽप्सरस आयुवो नाम ताभ्यः स्वाहा ॥ इदं मरीचिभ्योऽप्सरोभ्य आयुवोभ्यः० ॥ ऊँ सुषुम्णः सूर्य्यरश्मिश्चन्द्रमा गन्धर्व्वः । स न इदं ब्रह्मक्षत्रं पातुतस्मै स्वाहा वाट् ॥ इदं सुषम्णाय सूर्य्यरश्मये चन्द्रमसे गन्धर्वाय० ॥ ऊँ सुषुम्णः सूर्य्यरश्मिश्चन्द्रमा गन्धर्व्वस्तस्य नक्षत्राण्यप्सरसो भेकुरयो नाम । ताभ्यः स्वाहा ॥ इदं नक्षत्रेभ्योऽप्सरोभ्यो भेकुरिभ्यः० ॥ ऊँ इषिरोव्विश्वव्यचा व्वातो गन्धर्वः स न ऽइदम् ब्रह्म क्षत्रम्पातु तस्मै स्वाहा वाट् ॥ इदमिषिराय व्विश्वव्यचसे वाताय० ॥ ऊँ इषिरो व्विश्वव्यचाव्वातो गन्धर्व्वस्तस्यापो ऽप्सरस

ऊर्ज्जोनाम । ताभ्यः स्वाहा ॥ इदमद्भ्योऽप्सरोभ्य ऊग्र्भ्यः० ॥ ॐ भुज्युः सुपर्णो यज्ञो गन्धर्व्वः स न इदम् ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् ॥ इदं भुज्यवे सुपर्णाय यज्ञाय गन्धर्व्वाय० ॥ ॐ भुज्युः सुपर्णो यज्ञो गन्धर्व स्तस्य दक्षिणा अप्सरसस्तावा नाम । ताभ्यः स्वाहा ॥ इदं दक्षिणाभ्यो ऽप्सरोभ्य स्तावाभ्यो० ॥ ॐ प्रजापति र्विश्वकर्मा मनो गन्धर्व्वः ॥ स न इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् ॥ इदं प्रजापतये विश्वकर्मणे मनसे गन्ध र्वाय० ॥ ॐ प्रजापतिर्व्विश्वकर्मा मनोगन्ध र्व्वस्तस्यऽऋक्सामान्यप्सरसएषयो नाम । ताभ्यः स्वाहा ॥ इदं ऋक्सामेभ्योऽप्सरोभ्यः एषिभ्य० ॥

ये राष्ट्रभृत आहुतियाँ हैं ।

अथ जया होम

यह तेरह आहुतियां खील (लाजा) की देनी चाहिएँ ।

ॐ चित्तञ्च स्वाहा ॥ इदं चित्ताय० ॥१॥
ॐ चित्तिश्च स्वाहा ॥ इदं चित्त्यै० ॥२॥
ॐ आकूतं च स्वाहा ॥ इदमाकूताय० ॥३॥
ॐ आकूतिश्च स्वाहा ॥ इदमाकूत्यै० ॥४॥
ॐ विज्ञातंच स्वाहा ॥ इदं विज्ञाताय० ॥५॥
ॐ विज्ञातिश्च स्वाहा ॥ इदं विज्ञात्यै० ॥६॥
ॐ मनश्च स्वाहा ॥ इदम् मनसे० ॥७॥
ॐ शक्वरीश्च स्वाहा ॥ इदं शकवरीभ्यः० ॥८॥

ॐ दर्शश्च स्वाहा ॥ इदम् दर्शाय० ॥९॥
ॐ पौर्णमासञ्च स्वाहा ॥ इदं पौर्णमासाय० ॥१०॥
ॐ वृहच्च स्वाहा ॥ इदम् वृहते० ॥११॥
ॐ रथन्तरञ्च स्वाहा ॥ इदं रथन्तराय० ॥१२॥
ॐ प्रजापतिर्जयानिन्द्रायवृष्णे प्रायच्छदुग्रः पृतनाजयेषु । तस्मै विशः समनमन्त सर्वाः स उग्रः स इहव्यो बभूव स्वाहा ॥१३॥

ये भी राष्ट्रभृत आहुतियाँ हैं ।

अथ अभ्यातन होम

ॐ अग्निर्भूतानामधिपतिः समावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रे ऽस्यामाशिष्यस्यां । पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ॐ स्वाहा ॥ इदमग्नये भूतानामधिपतये० ॥१॥ ॐ इन्द्रो ज्येष्ठानामधिपतिः समावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याॐ स्वाहा ॥ इदमिन्द्राय ज्येष्ठानामधि पतये० ॥२॥ ॐ यमः पृथिव्या अधिपतिः समावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याॐ स्वाहा ॥ इदं यमाय पृथिव्यां अधिपतये० ॥३॥

प्रणीता के जल का अग्नि में छींटा देवे ।

ॐ वायुरन्तरिक्षस्याधिपतिः समावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ॐ स्वाहा ॥ इदम् वायवे अन्तरिक्षस्याधिपतये० ॥४॥ ॐ सूर्यो दिवाऽधिपतिः समावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ॐ स्वाहा ॥ इदं सूर्य्याय दिवाऽधिपतये० ॥५॥ ॐ चन्द्रमा नक्षत्राणामधिपतिः समावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ॐ स्वाहा ॥ इदं चन्द्रमसे नक्षत्राणामधि-पतये० ॥६॥ ॐ बृहस्पतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिः स मावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ॐ स्वाहा ॥ इदं बृहस्पतये ब्रह्मणोऽधिपतये० ॥७॥ ॐ मित्रः सत्यानामधिपतिः समावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ॐ स्वाहा ॥ इदम् मित्राय सत्यानामधिपतये० ॥८॥ ॐ वरुणोऽपामधिपतिः समावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याॐ स्वाहा ॥ इदं वरुणाय अपामधिपतये० ॥९॥ ॐ समुद्रः स्त्रोत्यानामधि-

पतिः समावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याॐ स्वाहा । इदं समुद्राय स्त्रोत्यानामधिपतये० ॥१०॥ ॐ अन्न ॐ साम्राज्यानामधिपतिः समावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याॐ स्वाहा ॥ इदमन्नाय साम्राज्यानामधिपतये० ॥११॥ ॐ सोम ऽऔषधीनामधिपतिः समावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ॐ स्वाहा ॥ इदम् सोमाय औषधीनामधिपतये० ॥१२॥ ॐ सविता प्रसवानामधिपतिः समावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यांपुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ॐ स्वाहा ॥ इदम् सवित्रेप्रसवानामधिपतये० ॥१३॥ ॐ रुद्रः पशूनामधिपतिः समावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याॐ स्वाहा ॥ इदम् रुद्रायपशूनाम धिपतये० ॥१४॥

कुशा से प्रणीता के जल का अग्नि में छींटा देवे ।

अथ अभ्यातन होम

ॐ त्वष्टा रूपाणामधिपतिः समाऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ॐ स्वाहा ॥ इदम् त्वष्ट्रे रूपाणामधिपतये० ॥१५॥ ॐ विष्णुः पर्वतानामधिपतिः समाऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ॐ स्वाहा ॥ इदम् विष्णवे पर्वतानामधिपतये० ॥१६॥ ॐ मरुतो गणानामधिपतयस्तेमाऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ॐ स्वाहा ॥ इदं मरुद्भ्यो गणानामधिपतिभ्यो० ॥१७॥ ॐ पितरः पितामहाः परेऽवरे ततास्ततामहाः इहमावन्त्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याॐ स्वाहा ॥ इदम् पितृभ्यः परेभ्यो ऽवरेभ्यश्च० ॥१८॥

प्रणीता के जल का छींटा लगावे ।

इत्यभ्यातन नाम होम

नीचे दिये गये मन्त्रों से घृत की आहुति देवे ।

ॐ अग्निरैतु प्रथमो देवतानाॐसोऽस्यै प्रजां मुञ्चतु मृत्युपाशात् । तदयॐराजावरुणोऽनुमन्यतां यथेयंॐ स्त्रीपौत्रमघन्न रोदात् स्वाहा ॥

इदमग्नये० ॥१॥ ॐ इमामग्निस्त्रायतां गार्हपत्यः प्रजामस्यै नयतु दीर्घमायुः । अशून्योपस्था जीवतामस्तु माता पौत्रमानन्दमभिप्रबुध्यतामियॐ स्वाहा ॥ इदमग्नये० ॥२॥ ॐ स्वस्ति नोऽग्ने दिवऽआ पृथिव्या व्विश्वानि धेह्यऽयथायजत्रा । यदस्यां महि दिवि जातं प्रशस्तं तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रॐ स्वाहा ॥ इदमग्नये० ॥३॥ ॐ सुगन्नु पन्थां प्रदिशन्नऽएहि ज्योतिष्मद्ध्येह्यजरन्नऽआयुः । अपैतु मृत्युरमृतंनऽआगाद्वैवस्वतोनोऽभयं कृणोतु स्वाहा ॥

इदं वैवस्वताय इदमग्नये ॥४॥

अन्तःपट

वर तथा कन्या दोनों को एक कपड़े से ओट करके पंडित नीचे दिये गये मन्त्र को मन में उच्चारण करते हुए अग्नि में आहुति देवे ।

ॐ परंमृत्योऽअनुपरेहिपन्थांयस्ते अन्यइतरो देवयानात् । चक्षुष्मते श्रृणवते ते ब्रवीमि मा नः प्रजाॐ रीरिषो मोत व्वीरान् स्वाहा । इदं मृत्यवे इदं न मम ॥५॥

इसके पश्चात उस वस्त्र को हटा लेवे ।

प्रणीता के जल का छींटा देवे ।

इस विधि से हवन करना चाहिए।

卐 लाजाहुति 卐

अब खीलों से आहुति दिलवावे।

इसके पश्चात कन्या को आगे और वर को पीछे तथा उनका मुँह पूर्व की तरफ करके वर की हथेली पर कन्या की हथेली रखकर कन्या का भाई अग्नि के ईशान कोण में खड़ा होकर वर और कन्या दोनों के हाथों में छाज में से खील तथा जांड़ के पत्ते और ढाक की लकड़ी घी में डुबोकर देवे। फिर नीचे दिये गये मन्त्र से पंडित अग्नि में पहली आहुति दिलावे।

ॐ अर्य्यमणं देवं कन्याऽअग्निमयक्षत। स नो ऽअर्य्यमा देवः प्रेतो मुञ्चतु मा पतेः स्वाहा॥ इदम् अर्य्यम्णे न मम ॥१॥

पंडित इसी प्रकार नीचे दिये गये मन्त्र से दूसरी आहुति दिलावे।

ॐ इयं नार्य्युपब्रूते लाजानावपन्तिका। आयुष्मानस्तु मे पतिरेधन्तां ज्ञातयो मम स्वाहा॥ इदमग्नये न मम ॥२॥

पंडित इसी प्रकार नीचे दिये गये मन्त्र से तीसरी आहुति दिलावे।

ॐ इमांल्लाजानावपाम्यग्ने समृद्धिकरणंतव। मम तुभ्यं च संवननं तदग्निरनुमन्यतामियꣳ स्वाहा॥ इदमग्नये न मम ॥३॥

卐 वर को कन्या का अंगूठा पकड़वाये 卐

इसके पश्चात वर कन्या के दायें हाथ का अंगूठा अपने दायें हाथ में पकड़े और पंडित नीचे दिये गये मन्त्र का उच्चारण करे।

ॐ गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं मया पत्या जरदष्टिर्यथा सः। भगोऽअर्यमा सविता पुरन्धि र्मह्यं त्वाऽदुर्गार्हपत्याय देवाः ॥४॥ ॐ अमोऽहमस्मिसात्वꣳसात्वमस्यमोऽअहम्। सामाहमस्मि ऋक्त्वंद्यौरहं पृथिवीत्वम् ॥५॥ ॐ तावेवविवहवहैसहरेतोदधावहै। प्रजां प्रजनयावहै पुत्रान् विन्द्यावहै बहून् ॥६॥ ॐ ते सन्तु जरदष्टयः संप्रियौ रोचिष्णू सुमनस्यमानौ पश्येम शरदः शतम् जीवेम शरदः शतꣳ श्रृणुयाम शरदः शतमिति ॥७॥

卐 पाषाण पूजन 卐

इसके बाद कन्या आगे होकर उत्तर में जो पत्थर का बाट रखा हुआ है, उसको अपने पाँव के सीधे अंगूठे से पूर्व दिशा की ओर मुँह करके छुए और पंडित नीचे दिये गये मन्त्र का उच्चारण करे।

ॐ आरोहेममश्मानमश्मेव त्वꣳस्थिराभव। अभितिष्ठ पृतन्यतोऽवबाधस्व पृतनायतः॥

卐 गाथा गान 卐

इसके पश्चात पंडित स्त्रियों के पतिव्रत यश का गान करे।

ॐ सरस्वति प्रेदभव सुभगे वाजिनीवति।

यां त्वा विश्वस्य भूतस्य प्रजायामस्याग्रतः ॥१॥
यस्यां भूतꣳ समभवद्यस्यां विश्वमिदं जगत् ।
तामद्य गाथां गास्यामि या स्त्रीणामुत्तमंयशः ॥२॥

卐 पहली अग्नि परिक्रमा 卐

कन्या आगे और वर पीछे ब्रह्मा तथा प्रणीता सहित नीचे दिये गये मन्त्र से अग्नि की परिक्रमा करें ।

ॐ तुभ्यमग्ने पर्य्यवहन्सूर्यां वहतु ना सह ।
पुनः पतिभ्यो जायां दा अग्ने प्रजयासह ॥

यह पहला फेरा हुआ ।

उसके बाद अग्नि के पीछे खड़े होकर लाजा होम, अँगूठे के साथ हस्त ग्रहण, अश्मारोहण, गाथा गान और अग्नि की दूसरी परिक्रमा करें ।

इसी प्रकार तीसरी परिक्रमा करावे ।

इसी तरह तीन बार नव लाजाहुति, तीन बार हस्त ग्रहण, अश्मारोहण तीन वार, गाथा गान तीन वार, अग्नि की तीन परिक्रमा करने से पूरा कार्य होना जाना जाता है। पंडित दूसरी तथा तीसरी परिक्रमा (फेरा) पीछे कही गई विधि से क्रमानुसार करवावे ।

बाकी रही खीलें कन्या का भाई छाज के किनारे से कन्या के हाथों पर डाले और कन्या उनकी अग्नि में आहुति देवे ।

ॐ भगाय स्वाहा । इदं भगाय० ॥

इसके बाद कन्या को पीछे और वर को आगे कर

अग्नि की चौथी मौन परिक्रमा करावे ।

यह चौथा फेरा हुआ ।

इसके पश्चात वर और कन्या दोनों अपने-अपने आसन पर बैठ जाएँ फिर पंडित कुशा को अपने घुटने से ब्रह्मा तक मिला लेवे अर्थात् कुशा के ब्रह्मा से मिले ।

फिर पंडित नीचे दिये गये मन्त्र को मन में बोलते हुए अग्नि में घी की आहुति देवे ।

ॐ प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये० ।
इति मनसा० ॥

स्रुवे से प्रोक्षणी पात्र में घी का छींटा देवे और पंडित नीचे दिये गये श्लोक को पढ़े ।

मण्डपं मधुपर्कश्च लाजाहोमः परिक्रमा
यावद्सप्तपदी नैवतावत् (कन्या कुमारिका)
विवाहोऽपूर्णः ।

अर्थ :- मण्डप छवाने से तो घर की सुंदरता हुई और मधुपर्क के खाने से वर की देह की शुद्धि हुई । लाजा (खीलों) से हवन करने से देवता लोग प्रसन्न हुए और परिक्रमा करने से अग्नि प्रसन्न हुई । जब तक सप्तपदी नहीं होती उस समय तक कन्या की कुंवारी संज्ञा होती है । ऐसा शास्त्रसम्मत है ।

सप्तपदी

इसके बाद पंडित अग्नि के उत्तर कि तरफ उत्तरोत्तर

सात मंडल बनावे, फिर वर और कन्या दोनों उत्तर की ओर मुख करके कन्या वर की दाहिनी ओर खड़ी होवे । एक-एक पैर के साथ दोनों अपना-अपना दायाँ पैर आगे रखें । पहले वर बाद में कन्या । जिस स्थान से दायाँ पैर उठाया है उसी स्थान पर बायां पैर रखते जाएँ और उत्तर की तरफ चलते जावें । इस प्रकार नीचे दिये गये मन्त्रों से सात कदम रखें ।

卐 वर के सात वचन 卐

वर कन्या से कहे कि-

तत्र प्रथमे ऊँ एकमिषे विष्णुस्त्वा नयतु ।

अर्थ- हे प्रिये ! विष्णु स्वरूप मैं घर के अन्नादि के लिए तेरा एक कदम रखवाता हूँ । मेरे घर में अन्नादि की मालिकन तू हो ।

द्वितीय ऊँ द्वे ऊर्ज्जे विष्णुस्त्वा नयतु ।

अर्थ -हे प्रिये ! तेरा यश बढ़े, तू बलवती हो अतः तेरा दूसरा कदम रखवाता हूँ ।

तृतीये ऊँ त्रीणि रायस्पोषाय विष्णुस्त्वा नयतु ।

अर्थ- हे प्रिये ! तेरी कीर्ति बढ़े और धन की वृद्धि हो, तेरा तीसरा कदम रखवाता हूँ ।

चतुर्थ ऊँ चत्वारिमयोभवाय विष्णुस्त्वा नयतु ।

अर्थ- हे प्रिये ! तेरा यश बढ़े । सुविद्या रूपी माया का तुझे सुख हो । चौथा कदम रखवाता हूँ ।

पञ्चमे ऊँ पञ्च पशुभ्यो विष्णुस्त्वा नयतु ।

अर्थ- हे प्रिये ! तेरी कीर्ति बढ़े । गौ आदि पशुओं को भी सुख प्राप्त हो । पाँचवा कदम रखवाता हूँ ।

षष्ठे ऊँ षड् ऋतुभ्यो विष्णुस्त्वा नयतु ।

अर्थ- हे प्रिये ! तेरा यश बढ़े । छः ओं ऋतुओं में तुमको सुख प्राप्त हो । छटा कदम रखवाता हूँ ।

सप्तमे ऊँ सखेसप्तपदा भवसामामनुव्रता भवविष्णुस्त्वा नयतु ।

अर्थ- हे प्रिये ! तेरा यश बढ़े । विष्णु भगवान तुझे सातों कदमों को प्राप्त करावें । सातों लोकों में तुम प्रसिद्ध हो जैसे जानकी, अरुन्धती आदि धर्म पतिव्रता हैं । तेरा सातवां कदम रखवाता हूँ । इसके बाद वर और कन्या दोनों अपने-अपने स्थान पर बैठ जाएँ ।

कन्या के सात वचन

यह सात वचन कन्या के हैं-

यदि यज्ञं कुर्यात्तस्मिन्मम सम्मतिं गृह्णीयात् ।

अर्थ-यज्ञ करने में मेरी सम्मति लें ।

यदि दानं कुर्यात्तस्मिन्नपि मम सम्मतिं गृह्णीयात् ।

अर्थ-जो दान आदि करें उसमें मेरी सम्मति लें ।

अवस्थात्रये मम पालनां कुर्यात् ।

अर्थ-जो शरीर की तीन अवस्थाएं हैं-बाल, युवा, वृद्ध उनमें भी मेरा पालन करें ।

धनादिगोपने मम सम्मतिं गृह्णीयात् ।

अर्थ-कहीं रुपया-पैसा रखें तो वह भी मुझे बताकर रखें।

गवादि पशु क्रय-विक्रये मम सम्मतिं गृह्णीयात्।

अर्थ-गाय, बैल, घोड़ा आदि पशु यदि खरीदें तो वह भी मुझे बताकर खरीदें।

बसन्तादि षट्ऋतुषु मम पालनं कुर्यात्।

अर्थ-बसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर छहों ऋतुओं में मेरा पालन-पोषण करें।

सखीषु मम हास्यं कटुवाक्यम् न वदेत् न कुर्यात।
तदाहं भवतां वामांगे आगच्छामि।

अर्थ-मेरी सहेलियों के बीच में मेरी हँसी न करें तथा कठोर वचन न बोलें तो मैं तुम्हारे बायें अंग आऊँ।

वर के चार वाक्य

इन चार वाक्यों को वर कहे-

उद्याने मद्यपाने च पितागृहगमनेन च।
आज्ञा भंगो न कर्त्तव्यं वरवाक्यचतुष्टयकम् ॥

अर्थ-जंगल अर्थात् वन में न जाये। जो मनुष्य शराब पिये हुए हो उसके सामने न जाये। अपने पिता के यहाँ मेरी आज्ञा के बिना न जाये।

धर्म तथा शास्त्रोचित मेरी आज्ञा को न तोड़े तो मैं अपने बायें अंग लेता हूँ।

दूसरी सप्तपदी

आदौ धर्मधरा कुटुम्बसुखदा मिष्टाप्रिया भाषिणी।
क्रोधालस्यनिवारिका सुखकरा आज्ञानुगावर्तिनी ॥
शास्त्रानन्दयवृद्धशासनपरा धर्मानुगा सादरम्।
एते सौम्यगुणा वसन्ति सततं वामेहि सा त्वं भव ॥

अर्थ-1. हमारे कुल का धर्म यदि तू धारण करे, तो बायें अंग आ, 2. हमारे परिवार को सुख देवे, तो बायें अंग आ, 3. मीठा वचन बोले और क्रोध, आलस्य का त्याग करे तथा बड़ों के उपदेश का पालन करे, तो बायें अंग आ, 4. सुख और कीर्ति देवे, तो बायें अंग आ, 5. मेरा कहा माने, तो बायें अंग आ, 6. मेरे माता-पिता की सेवा-सुश्रुषा करे, तो बायें अंग आ, 7. मेरी बहनों से क्रोध न करे, तो बायें अंग आ। ये गुण तेरे में हों तो बायें अंग आ।

कलश के जल का वर और कन्या
卐 के ऊपर छींटा देना 卐

इसके पश्चात वर नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए जो ब्राह्मण दृढ़ कलश ले रहा है उसके जल का आम के पत्ते से कन्या के ऊपर छींटा लगावे उसके बाद अपने ऊपर छींटा लगावे।

ॐ आपः शिवः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्ते कृण्वन्तु भेषजम्।

जैसा पहले कहा गया है उसी तरह वरुण कलश से वर आगे दिये गये मन्त्र का उच्चारण करते हुए कन्या के शरीर पर जल का छींटा देवे।

ॐ आपो हिष्ठामयोभुवस्तान ऊर्ज्जेदधातनमहेर णायचक्षसे । ॐ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः । उशतीरिवमातरः ॥ ॐ तस्मा अरङ्गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ । आपो जनयथा च नः ।

卐 वर और कन्या सूर्य के दर्शन करें 卐

फिर पंडित वर तथा कन्या से सूर्य को देखने को कहे, तब कन्या सूर्य के दर्शन करे और वर नीचे दिये गये मन्त्र का उच्चारण करे ।

ॐ तच्चक्षुर्देवहितम् पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येमशरदः शतंजीवेमशरदः शतꣳ श्रृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीना स्याम शरद शतं भूयश्च शरदः शतात् ॥

卐 ध्रुव दर्शन एवं हृदय स्पर्श 卐

यदि रात्रि हो तो वर कन्या से ध्रुव तारे के दर्शन करने को कहे तब कन्या तारे को देखे और नीचे दिये गये मन्त्र का उच्चारण करे ।

ॐ ध्रुवमति ध्रुवं त्वा पश्यामि ध्रुवैधि पोष्या मयि । मह्यं त्वऽदात् बृहस्पतिर्मया पत्या प्रजावती सञ्जीव शरदः शतम् ॥

फिर वर कन्या के दायें कन्धे पर अपना दायाँ हाथ रखकर नीचे दिये गये मन्त्र का उच्चारण करते हुए कन्या के हृदय से अपना हाथ लगाये ।

ॐ ममव्रते ते हृदयं दधातु मम चित्तमनुचित्तं तेऽअस्तु । मम वाचमेकमना जुषस्व प्रजापतिष्ट्वा

नियुनक्तु मह्यम् ॥

इसके बाद कन्या को वर की बायीं ओर बैठा देवे और तत्काल वर को दक्षिण की ओर बैठा दे ।

卐 कन्या की मांग में सिन्दूर भरना 卐

फिर नीचे दिये गये मन्त्र का उच्चारण करते हुए वर सोने की अंगूठी से कन्या की माँग में रोली भरे ।

ॐ सुमङ्गलीरियं वधूरिमां समेत पश्यत । सौभाग्यमस्यै दत्त्वा याथास्तं विपरेतन ॥

फिर पंडित नीचे दिये गये मन्त्र का उच्चारण करते हुए अग्नि में घृत की आहुति देवे ।

ॐ प्रजापतये स्वाहा ॥ इदं प्रजापतये न मम ।
ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा ॥ इदमग्नये० ।

स्रुवे से प्रोक्षणी पात्र में घी का छींटा देवे ।

卐 स्रुवे के घी को मुँह लगाना 卐

वर स्रुवे के घी को मुँह से लगावे फिर आचमन कर हाथ धोवे ।

卐 पूर्ण पात्र दान 卐

फिर जो ब्रह्मा बना है उसको वर पूर्णपात्र पर दक्षिणा रखकर नीचे दिये गये संकल्प मंत्र का उच्चारण करते हुए देवे ।

ॐ अद्येत्यादि मासानां मासोत्तमे मासे अमुक गोत्रोऽमुक शर्म्माहं कृतैतद्विवाह होम कर्म्मणि कृता कृता वेक्षणरूपब्रह्म कर्मकर्तुः प्रतिष्ठार्थं इदं पूर्णपात्र दानं प्रजापति दैवतं अमुकगोत्राय अमुकशर्म्मणेब्राह्मणायदक्षिणां तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

अद्येत्यादि० पूर्णपात्रदानप्रतिष्ठासांगताफल प्रात्त्यर्थं इमां दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे ।

इसके पश्चात पंडित निम्न मंत्र का उच्चारण कर ब्रह्मा की गाँठ खोल देवे ।

ॐ सुमित्रिया न आपः औषधयः सन्तु इति ॥

फिर पंडित निम्न मंत्र का उच्चारण कर वर और कन्या दोनों के ऊपर प्रणीता के जल का पवित्रे से छींटा देवे ।

ॐ संमृज्य दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टियं च वयं द्विष्मः ।

इसके पश्चात प्रणीता पात्र और पवित्रे को ईशान दिशा में उल्टा कर के रख दे ।

फिर पंडित नीचे दिये गये मन्त्र का उच्चारण करते हुए वेदी के चारों ओर की कुशा उठाकर अग्नि में डाल देवे ।

ॐ देवाः गातु विदोगातुं वित्वा गातुमितः । मनसस्पते ऽइमं देवयज्ञꣳ स्वाहा । व्वातेधाः स्वाहा ॥ इदं ॥ इति बर्हिहोमः ।

पूर्णाहुति विधान

कुछ आचार्यों के मतानुसार विवाह में पूर्णाहुति करना वर्जित है अतः जिसकी जैसी राय हो वैसा करे ।

पंडित कन्या को उठाकर उसके सीधे हाथ में स्रुवा

देवे और उस पर घृत एवं सुपारी रखकर नीचे लिखे मन्त्र का उच्चारण करते हुए अग्नि में पूर्णाहुति करावे ।

ॐ मूर्द्धानंदिवोऽअरतिम्पृथिव्यां वैश्वानरमृत आजातमग्निम् । कवि ꣳ साम्राज्यमतिथिं जनानामासन्नपात्रं जनयन्तः देवाः स्वाहा ॥ इदमग्नये० ॥

फिर पंडित पूर्णाहुति पर नीचे दिये गये मन्त्र का उच्चारण करते हुए घृत की धार छोड़े ।

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्र मसि सहस्त्रधारं । देवस्त्वासविता पुनातु वसो पवित्रेण शतधारेण सुप्वाकामधुक्षः स्वाहा ॥

पंडित स्रुवे पर भस्म लगाकर दायें हाथ की अनामिका से नीचे दिये गये मन्त्र का उच्चारण करते हुए वर तथा कन्या दोनों के माथे पर लगावे ।

ॐ त्र्यायुषं जमदग्ने इति ललाटे ॥

इसी तरह नीचे दिये गये मन्त्र का उच्चारण करते हुए गले से लगावे ।

ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम् इति ग्रीवायाम् ॥

इसी प्रकार नीचे दिये गए मन्त्र का उच्चारण करते हुए दायें कन्धे से लगाए ।

ॐ यद्देवेषुत्र्यायुषं इति दक्षिणबाहुमूले ॥

इसी तरह आगे दिये गये मन्त्र का उच्चारण करते हुए हृदय से लगाए ।

ॐ तन्नो * ऽस्तु त्र्यायुषम् इति हृदये ॥

छायापात्र का दान

काँसी के पात्र में घी भरकर कन्या और वर दोनों अपना मुँह देखें और उसमें चाँदी की दक्षिणा डालें इसके बाद नीचे दिये गये मन्त्र का उच्चारण करते हुए संकल्प करें।

अद्येत्यादि मासानां मासोत्तमेमासे० अमुकगोत्रोऽहममुक शर्म्माहं ममविवाहसांगताफलप्राप्तयर्थं श्रीमहा मृत्युञ्जय देवता प्रीत्यर्थं इदं छायापात्रघृतप्रपूरितं कांस्यपात्रदक्षिणासहितं यथानाम गोत्राय अमुक शर्म्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे ।

फिर इस छायापात्र को किसी डकौत को दे देवे ।

卐 दान प्रतिष्ठा का संकल्प 卐

इसके पश्चात दान प्रतिष्ठा का नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए संकल्प करे ।

अद्याऽमुकगोत्रोऽहममुकनाम शर्म्माहं इदं छायापात्र दानप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं ऽमुकगोत्रायामुक ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे ।

इसके पश्चात नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए हाथ धो ले ।

ॐ पवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां० ।

वर विवाह कराने की दक्षिणा में पंडित को गाय, क्षत्रिय को ग्राम, वैश्य को घोड़ा तथा अन्य को सामर्थ्य के

* कन्या के भस्मी लगाते समय तन्नो की जगह तत्ते बोले ।

अनुसार दक्षिणा दे । पहले कन्या के पिता से नीचे दिये गये मन्त्र का उच्चारण करते हुए संकल्प करावे ।

अद्येत्यादि० अमुक गोत्रः अमुक शर्म्माहं आत्मनः पुत्री-विवाहसांगताफल प्रात्यर्थं अमुकगोत्राय अमुकशर्म्मणे ब्राह्मणाय इमां दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे ।

(ब्राह्मण को दे दे) इसके पश्चात दान प्रतिष्ठा का संकल्प करे ।

卐 कर्मकर्ता की दक्षिणा का संकल्प 卐

वर नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए कर्मकर्त्ता की दक्षिणा का संकल्प करे ।

अद्येत्यादि० अमुकगोत्रः अमुक शर्म्माहं मम विवाहसांगताफलप्राप्त्यर्थं श्रीयज्ञपुरुषनारायण प्रीत्यर्थं स वधूकोऽहममुकगोत्राय अमुक शर्म्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे ।

(ब्राह्मणको दे दे) इसके पश्चात दान प्रतिष्ठा का संकल्प करे ।

अमुक गोत्रः अमुक शर्म्माहं मम विवा० ।

卐 तिलक करना व आशीर्वाद देना 卐

पंडित वर तथा कन्या के नीचे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए तिलक करे ।

आयुष्कामो यशष्कामः पुत्रकामस्तथैव च ।
आरोग्यं धनकामश्च सर्वेकामाः भवन्तु ते ॥

पंडित अपने हाथ में अक्षत और पुष्प लेकर आगे दिये गये मंत्र का उच्चारण करते हुए वर और कन्या दोनों को आशीर्वाद दे ।

ॐ श्रीकृष्णः कुशलं करोतु भवतां धाता प्रजानां सुखं । निर्विघ्नं गणनायकः प्रतिदिनं भानुः प्रतापोदयम् ॥ शम्भुस्ते धनधान्यकीर्तिमतुलां दुर्गाऽरिनाशं सदा । गंगा ते खलु पापहानिशिदिनं लक्ष्मीस्सदातिष्ठतु ॥

इसके पश्चात पंडित अपने हाथ में लिये हुए चावल और पुष्प वर को दे दे । फिर पुण्य क्षेत्र समा वेदी करावे । इसके पश्चात अग्नि में एक टका गिरवाकर चौरी को रखकर तोला उल्टा कर देवे । इसके पश्चात पंडित वर और कन्या के पिता से गणेश जी पर चावल छुड़वावे और नीचे दिये गये मन्त्र का उच्चारण करते हुए देवताओं का विसर्जन कर देवे ।

卐 देवताओं का विसर्जन 卐

ॐ गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थान परमेश्वर ।
यत्रब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छहुताशन ॥

अर्थ- गणेश जी एवं लक्ष्मी जी हमारे घर में विराजमान रहें तथा देवतागण अपने-अपने स्थानों को जायें । पंडित तिलक कर के सेवल कर देवे । इसके पश्चात वर आगे तथा कन्या पीछे, थापे के आगे जायें ।

॥ इति विवाह पद्धति ॥

श्री रामचन्द्र जी के विवाह का शाखोच्चार

श्री गणेश मनाय कै शाखा करूं बखान ।
वर कन्या चिरंजीव हों कृपा करें भगवान ॥
जनकपुरी के राव हैं राजा जनक सुजान ।
कन्या ब्याह रचाय कै यह प्रण मन में ठान ॥
परशुराम के धनुष को जो कोई लेय उठाय ।
सीताजी उसको वरें कार्य सुफल हो जाय ॥
देश-देश के भूप सुन आए जनक द्वार ।
धनुष बाण उठत नहीं सबने मानी हार ॥
नारद मुनि आयो जभी राजा हुए प्रसन्न ।
सीता वर है कौन सा रामचन्द्र हरि विश्न ॥
विश्वामित्र लेकर चले लक्ष्मण श्री भगवान ।
सब राजा देखें खड़े धनुष तोड़ दिया तान ॥
फूलों की माला गले दीनी सीता डार ।
सब राजा घर कू चले अपने मन में हार ॥
पंडित कू बुलवाय कै लग्न लिखौ शुभ वार ।